जुलाई , 2021 वर्ष : 42 अंक : 7

www.indiatibet.com

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

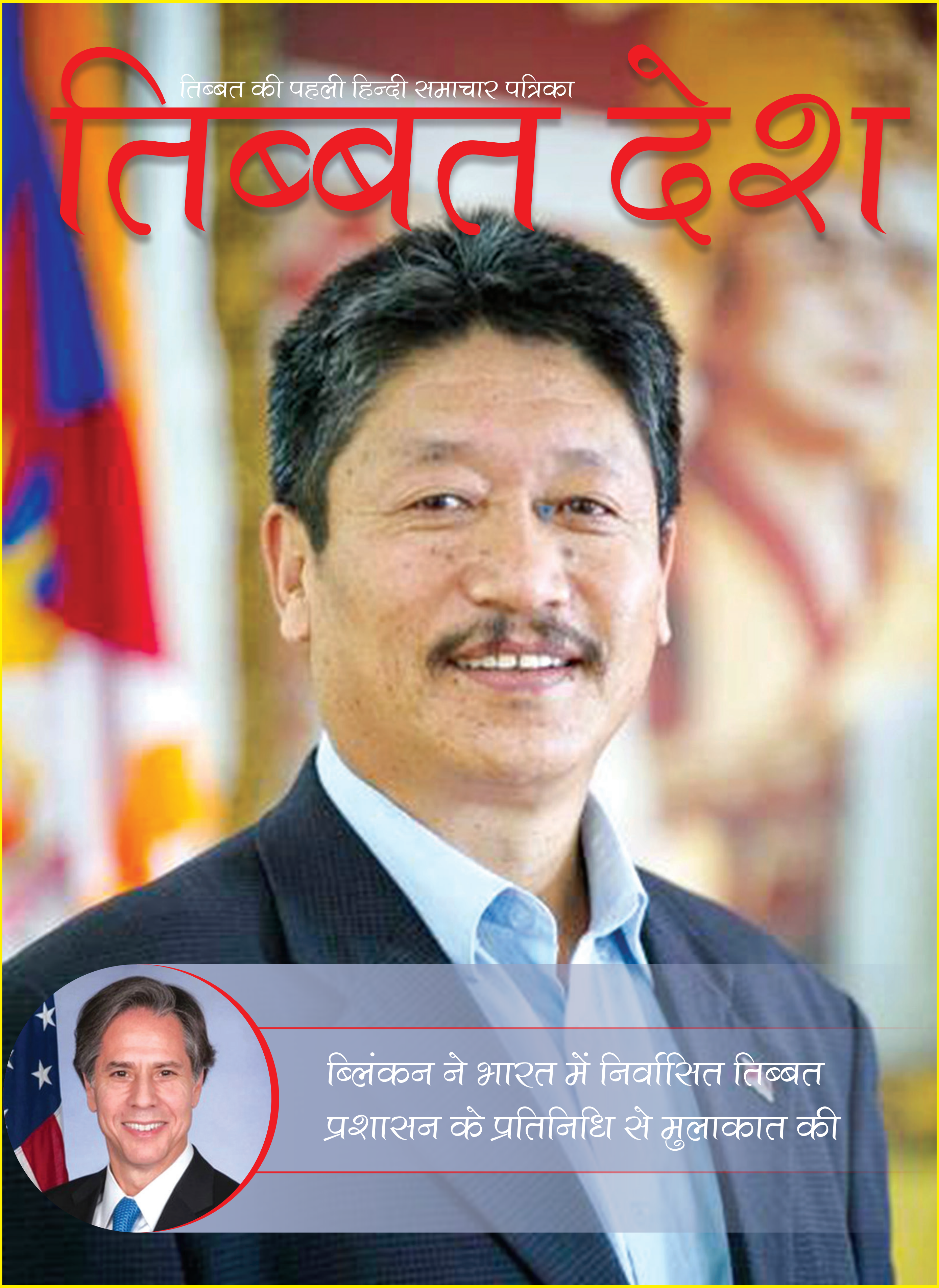

ब्लिंकन ने भारत में निर्वासित तिब्बत प्रशासन के प्रतिनिधि से मुलाकात की

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

जुलाई, 2021 वर्ष : 42 अंक : 7

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित

तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी , जिगमे सुलट्रिम

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन पलजोर , तेनजिन जोरदेन

वितरण प्रबंधक
जामयंग छोपेल, छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

निर्वाचित तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता : तेनज़िन लेक्शे

समाचार -

परम पवन दलाई लामा "स्वास्थ सुविधा मे करुणा" के वेबिनार मे जुड़े। 1
श्री वीरभद्र सिंह जी के निधन पर शोक व्यक्त। 2
महाराष्ट्र में राहत और बचाव के प्रयासों के लिए सहायता। 3
पूरे विश्व मे परम पवन दलाई लामा जी के ८६ वी जन्मदिन मनाया। 4
चीनी सरकार की कार्यवाही के बाद चार तिब्बती भिक्षुओं को "असाधारण रूप से कठोर दण्ड" दिए गए। 5
तिब्बत में दलाई लामा का जन्मदिन मनाते कई गिरफ्तार 6
तिब्बतियों ने चीन के पंचेन लामा की अनदेखी की। 7
सिक्योंग ने अमरीकी विदेश विभाग के नेतृत्व के साथ आभासी बैठक में भाग लिया। 8
सीटीए के प्रवक्ता तेनज़िन लेक्शे। 9
पंडित शिवनारायण उपाध्याय जी। 10
तिब्बत सपोर्ट ग्रुप ने परम पवन जी का जन्मदिन मनाया। 11

समाचार -

भारत तिब्बत संवाद मंच ने परम पवन जी का जन्मदिन मनाया। 12
भारत तिब्बत समन्वय संघ ने आयोजित की एक वेबिनार। 13
भारत तिब्बत सहयोग मंच ने कैलाश मानसरोवर की मुक्ति के विषय पर आयोजित की एक वेबिनार। 14
स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी जी की जयंती पर अन्तर्राष्ट्रीय भारत तिब्बत सहयोग समिति और भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र ने याद किया। 15
ब्लिंकन ने दलाई लामा के प्रतिनिधि से मुलाकात की। 16
अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति चीन पर प्रतिबंध लगाएगी यदि चीन ने दुर्व्यवहार समाप्त नहीं किया। 17
अमेरिकी सीनेट ने चीन के शिनजियांग के सभी उत्पादों पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पारित किया। 18
येशी दावा। 19
विजय क्रान्ति। 20

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.com
Email: indiatibet7@gmail.com

विचार

विजय क्रान्ति

हताशा, चिंता और अहंकार की अभिव्यक्ति है शी की तिब्बत यात्रा

अपनी बात

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई

गत 6 जुलाई,2021 को तिब्बतियों और तिब्बत समर्थकों द्वारा परमपावन दलाई लामा के जन्म दिन के अवसर पर अनेक कार्यक्रम विभिन्न देशों में आयोजित किये गये। बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा चूँकि तिब्बती हैं, इसलिये तिब्बत पर चर्चा स्वाभाविक है। इसका अन्य कारण है दलाई लामा का अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व और कृतित्व। इसी व्यक्तित्व और कृतित्व के परिणामस्वरुप तिब्बत का सवाल एक अंतरराष्ट्रीय सवाल बन चुका है।

दलाई लामा के जन्म दिन पर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शुभकामना संदेश से विस्तारवादी चीन के राष्ट्रपति शी जिंपिंग की बौखलाहट आश्चर्यजनक नहीं है। साम्यवादी शी जिंपिंग के लिये दलाई लामा की "चार प्रतिबद्धतायें" और " सी लर्निंग" महत्वहीन हैं। चीन ने दुष्प्रचारित किया है कि तिब्बत हमेशा से चीन का भूभाग था। उसने तिब्बत में दलाई लामा की तस्वीर पर रोक लगा रखी है। मोबाईल में ऐसी तस्वीर पर रोक तिब्बत का चीनीकरण किया जा रहा है। प्रसन्नता की बात है कि 1959 से अब तक तिब्बतियों की दलाईलामा के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा लगातार बढ़ती जा रही है। चीन अपनी साजिश में विफल रहा है।

साम्राज्यवादी चीन द्वारा स्वतंत्र देश तिब्बत पर अवैध नियंत्रण किये जाने के बाद दलाईलामा ने शरणस्थली के रुप में भारत को चुना। वे इसे गुरुभूमि कहते हैं। भारत को अपना दूसरा घर कहते हैं। तत्कालीन भारत सरकार ने चीन का विरोध नहीं किया था। भारत के अनेक राजनेताओं की चेतावनी और परामर्श की उपेक्षा कर "पंचशील" एवं "हिन्दी चीनी भाई भाई" के नारे लग रहे थे। शांति के प्रतीक सफेद कबूतर उड़ाये जा रहे थे। उस समय भारतीय नेतृत्व तिब्बत के पक्ष में खड़ा होता तो चीन को पीछे हटना पड़ता। चीन की सीमा चीन की दीवार है। वह तिब्बत पर अवैध कब्जा नहीं कर पाता। तब भारत और तिब्बत के पारंपरिक संबंधों की अनदेखी की गई तथा तिब्बत को चीन का भूभाग मान लिया गया। ऐसी स्थिति में भी तिब्बत के तत्कालीन राजप्रमुख दलाई लामा ने भारत में शरण ली। तत्कालीन भारत सरकार ने चीनी विरोध के बावजूद तिब्बतियों को शरण देकर सराहनीय कार्य किया था।

भारत में रहते हुए दलाई लामा की चार प्रतिबद्धतायें हैं। शांति, अहिंसा, करुणा, मैत्री आदि मानवीय मूल्यों को वे अधार्मिक एवं धर्मविरोधी लोगों के लिये भी जरूरी मानते हैं। ये मानवीय मूल्य ही हैं जिनके सहारे सभी समस्याओं का हल निकलता है। फिर मजहब, जिसे पंथ, संप्रदाय और रिलिजन कहा जाता है, के नाम पर भी संघर्ष नहीं होंगे। दलाई लामा कहते हैं कि व्यक्ति अपने रिलिजन के अनुसार पूजा-पाठ करे और अन्य सभी रिलिजन का सम्मान करे। संसार में अनेक रिलिजन हैं। हमें सबका सम्मान करना है। यही सेकुलरिज्म अर्थात् पंथनिरपेक्षता है। "सर्वपंथसमादरभाव" हमारे स्वभाव में होना चाहिये।

मनवीय मूल्यों तथा पंथनिरपेक्षता के समान ही दलाई लामा की प्रतिबद्धता तिब्बती भाषा संस्कृति के प्रति है। उनके अनुसार तिब्बती संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण तथा प्रकृति के प्रति सहयोगपूर्ण सामंजस्य का आदर्श निहित है। वे प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लगे हैं। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का संदेश देती है। अपनी इन्हीं चार प्रतिबद्धताओं के कारण दलाई लामा संपूर्ण विश्व में श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं। अनेक देशों और संस्थाओं द्वारा उन्हें अनगिनत सम्मान, पुरस्कार और उपाधियों से अंलकृत किया गया है। इनमें नोबल शांति पुरस्कार भी शामिल है।

दलाई लामा शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक (Social), भावनात्मक (Emotion-al), तथा नैतिक(Ethical) अध्ययन(Learning) को ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं। इसे ही सी लर्निंग (SEE Learning) कहा जाता है। विश्व के अनेक देश पाठ्यक्रमों में "सी लर्निंग" को शामिल कर रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में मानवीय मूल्य मजबूत होंगे, उनकी तार्किक क्षमता बढ़ेगी तथा वे पंथनिरपेक्ष भी होंगे।

उपनिवेशवादी चीन अपने सभी पड़ोसी देशों के भूभाग में अवैध घुसपैठ की नीति पर चल रहा है। अब उसका अगला शिकार अफगानिस्तान होने वाला है। अमरीकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अफगानिस्तान से अमरीकी सैनिकों की पूर्ण वापसी की घोषणा कर दी है। चीन इसी से उत्साहित होकर पाकिस्तान की मदद से अफगानिस्तान में घुसपैठ की तैयारी में जुटा है। अफगानिस्तान में तालिबानियों ने कुछ वर्ष पूर्व भगवान् बुद्ध की बामियान स्थित विशाल बुद्ध पूर्णिमा को गोले-बारूद से उड़ा दिया था। चीन अपनी रणनीतिक आवश्यकतानुसार तालिबानियों का भी समर्थन कर सकता है। ऐसा करके वह भारत के मित्र देश अफगानिस्तान का इस्तेमाल भारत के खिलाफ उसी तरह करेगा जिस तरह वह पाकिस्तान का करता है। चीन की साजिश प्रांरभ से रही है कि भारत को अपमानित और कमजोर किया जाये।

निर्वासन में रह रही निर्वाचित तिब्बत सरकार का स्पष्ट मत है कि तिब्बत समस्या का समाधान विश्व शांति, विशेषकर भारत के हित में है। भारत सरकार को चाहिये कि वह भारत-चीन संबंधों में तिब्बत के प्रश्न को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करे। इतिहास गवाह है कि भारत एवं चीन के संबंध तब मजबूत और विश्वसनीय थे जब दोनों के बीच स्वतंत्र तिब्बत स्थित था। तब भारत की सीमा तिब्बत से मिलती थी। तिब्बत पर चीन के अवैध नियंत्रण के बाद " भारत-तिब्बत सीमा" का स्थान "भारत-चीन सीमा" ने ले लिया। तभी से भारतीय शांति, सुरक्षा, समृद्धि और स्वाभिमान पर गंभीर संकट है।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9829806065, 8764060406
E-mail & facebook:- shyamnathji@gmail.com

• स्वास्थ्य सेवाओं में करुणा

dalailama.com, ०७ जुलाई, २०२१

परम पवन दलाई लामा "स्वास्थ सुविधा मे करुणा" के वेबिनार मे जुड़े।

थेकचेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। आज ०७ जुलाई को प्रातः परम पावन दलाई लामा को डॉक्टर रेड्डीज फाउंडेशन द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं में करुणा के बारे में बोलने के लिए आमंत्रित किया गया था। यह फाउंडेशन डॉक्टर के. अंजी रेड्डी द्वारा स्थापित गैर-लाभकारी संगठन है। डॉक्टर रेड्डीज लेबोरेटरीज लिमिटेड के सह-अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक जी.वी. प्रसाद ने परम पावन का संक्षिप्त परिचय देते हुए इस कार्यक्रम की शुरुआत की। कल के कार्यक्रम का समापन उन्होंने ही परम पावन को उनके ८६वें जन्मदिन पर बधाई देते हुए किया था।

परम पावन ने शुरुआत में श्रोताओं का अभिनन्दन किया- 'नमस्ते, ताशी देलेक, सुप्रभात'। उन्होंने इसके बाद अपना संबोधन शुरु करते हुए कहा, 'यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं। मेरा जन्म तिब्बत में हुआ था, लेकिन मैंने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा इस सुखद और शांतिपूर्ण देश में बिताया है। यहां धार्मिक सद्भाव और प्रेस की स्वतंत्रता है। यहां पर मैं अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकता हूं जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों तक प्रसारित हो सकते हैं। मैं यहां आकर खुश हूं।'

उन्होंने कहा, 'जहां तक कल के मेरे जन्मदिन का सवाल है, कई पुराने दोस्तों और शुभचिंतकों ने मुझे शुभकामनाएं भेजीं। इनमें भारत के प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्यगण और कई मुख्यमंत्री शामिल हैं। विदेशों से भी कई मित्रों ने मुझे शुभकामनाएं भेजीं। इनमें अमेरिकी कांग्रेस के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स की स्पीकर नैन्सी पेलोसी शामिल हैं। उन्होंने करुणापूर्ण शब्दों से आगे बढ़कर समर्थन व्यक्त किया है। असल में उन्होंने तिब्बत का दौरा किया था, तिब्बती और चीनी नेताओं से बात की थीं। इसके बाद वह यहां धर्मशाला भी आई थीं। मैं उन सभी को उनके उदार विचारों के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। परम पावन ने आगे कहा, मुझे आए सपनों और अन्य दिव्य झलकों से संकेत मिला है कि मैं ११० से लेकर ११३ वर्ष तक की आयु तक जीवित रह सकता हूं। मैंने महसूस किया कि कल जो मैत्रीपूर्ण संदेश मुझे मिले, वे केवल कूटनीतिक इशारे नहीं, बल्कि सच्चे और पूरे दिल से थे। वे मुझे यथासंभव लंबे समय तक जीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

उन्होंने कहा, मेरी नित्य की साधना, जिसमें कई घंटों का ध्यान शामिल है, नालंदा परंपरा से निकली है। आठवीं शताब्दी में तिब्बती राजा ने एक महान विद्वान शांतरक्षित को तिब्बत आमंत्रित किया। उन्होंने नालंदा परंपरा की शुरुआत की जो मेरे सभी ज्ञान का स्रोत है। मैं खुद को उस परंपरा का एक छात्र, शायद एक विद्वान मानता हूं। हालांकि एक स्थानीय डीएसपी ने मजाक में मुझे नालंदा के कुलाधिपति के रूप में संदर्भित किया। मैंने अपने प्रशिक्षण में जो कुछ भी सीखा वह भारत का ज्ञान है और यह सब तर्क पर आधारित है।
हाल के दशकों में मैंने कई आधुनिक वैज्ञानिकों से मुलाकात की है और उनके साथ हम आसानी से चर्चा कर सकते हैं क्योंकि वे और मैं दोनों चर्चा में तर्कपूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हैं। अधिकतर आधुनिक वैज्ञानिक मस्तिष्क और शारीरिक स्वास्थ्य तक ही खुद को सीमित रखते हैं और वे आंतरिक शांति पर बहुत कम ध्यान देते हैं। हालांकि, उनमें से कई आज हमारी अशांतकारी भावनाओं से निपटने और चित्त की शांति प्राप्त करने के बारे में हमारी बातों को काफी तवज्जो दे रहे हैं।

परम पावन ने कहा, मेरी मुख्य साधनाओं में करुणा और अहिंसा शामिल हैं। ये ऐसे गुण हैं जिनकी हमें आज पहले से कहीं अधिक जरूरत है। हम जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं उनमें से कई हमारी खुद की पैदा की हुई होती हैं। वे करुणा की कमी के कारण उत्पन्न हो जाती हैं। इसलिए मैं तर्क पर आधारित धर्मनिरपेक्ष संदर्भ में करुणा और अहिंसा दोनों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित हूं।

करुणा सभी धर्मों का मूल संदेश है। यही कारण है कि दार्शनिक मतभेदों के बावजूद सभी में करुणा का सम्मान करना संभव है।
मेरी नवीनतम प्रतिबद्धता धर्मनिरपेक्ष आधार पर प्राचीन भारतीय विचारों को पुनर्जीवित करना है। आधुनिक शिक्षा कई मायनों में उपयोगी है, लेकिन इसे और अधिक पूर्ण होने के लिए हमें इसे प्राचीन भारतीय ज्ञान, करुणा और अहिंसा के साथ जोड़ना होगा और साथ ही 'समता' और 'विपश्यना' से आई दिमाग के कामकाज की समझ के साथ उसे जोड़ना होगा। जो मन और अंतर्मन को शांत रखता है।

पिछली शताब्दी में महात्मा गांधी ने अपने तरीके से अहिंसा का मार्ग दिखाया था। उन्होंने अफ्रीका और अमेरिका में आर्कबिशप टूटू और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे अनुयायियों को प्रेरित किया। आज एक ऐसी दुनिया में जहां अपराध और हत्या अभी भी जारी है, हमें करुणा और अहिंसा की आवश्यकता है। इसके लिए मैं इन आदर्शों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने के तरीके खोजने के लिए प्रतिबद्ध हूं। जब कोविड महामारी से संबंधित प्रतिबंध से छूट मिलेगी तो मैं शिक्षाविदों के साथ चर्चा करने के लिए उत्सुक हूं कि यह कैसे किया जा सकता है।

जहां तक स्वास्थ्य सेवाओं में करुणा की भूमिका का सवाल है, स्वाभाविक रूप से जब हमारा दिमाग परेशान होता है तो इसका हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हमारा रक्तचाप बढ़ जाता है और हम खुद को सोने में असमर्थ पाते हैं। मैं समझता हूं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारा मन यह सोचकर शांत रहता है कि चाहे कुछ भी हो, हम नौ घंटे अच्छी तरह सो पाएंगे।
हर कोई अपने स्वास्थ्य की देखभाल करना चाहता है, लेकिन हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि मन की शांति का हमारे शारीरिक सेहत पर बड़ा प्रभाव पड़ सकता है। करुणा और अहिंसा का ध्यान इसमें रचनात्मक योगदान दे सकता है, यही कारण है कि मुझे इन गुणों को पेश करने और उन्हें आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने में दिलचस्पी है।

वर्चुअल माध्यम से जुड़े श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर में परम पावन ने सलाह दी कि समय का दबाव रहने पर भी डॉक्टरों को अपने कार्य को पवित्र, आध्यात्मिक सेवा के समान समझना चाहिए। उन्होंने उल्लेख किया कि उनके अपने अनुभव में एक मुस्कुराता हुआ डॉक्टर आपको आराम देता है, जबकि एक कठोर चेहरे वाला चिकित्सक चिंता पैदा कर देता है।
यहां तक कि जब डॉक्टर और नर्स को यह पता हो जाता है कि उनकी देखभाल में रह रहे रोगी के जीवित रहने की संभावना नहीं है तो ऐसे में उनके प्रति

कारुणिक और दयावान होना महत्वपूर्ण हो जाता है। यहां भारत में हम मानते हैं कि हम एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेते हैं और मृत्यु के समय शांतचित्त होना जरूरी होता है न कि क्रोधित या भयभीत होना। अपने जीवन की शुरुआत में हमें अपनी मां के स्नेह में करुणा प्राप्त होती है और जैसे ही हमारे जीवन का अंत होता है हमें फिर से करुणा की आवश्यकता होती है।

जहां तक हमारी नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने की बात है, मोह और क्रोध हमारे जीवन का हिस्सा हैं। लेकिन उनके लिए मारक भी हैं। हमें न केवल क्रोध और भय से होने वाले नुकसान पर चिंतन करना चाहिए, बल्कि करुणा और अहिंसा की साधना से मिलने वाले लाभों पर भी विचार करना चाहिए और उनके बीच संतुलन खोजना चाहिए। प्राचीन भारत के आचार्यों में से एक शांतिदेव ने क्रोध और घृणा से होनेवाली हानियों और करुणा और क्षमा में निहित लाभों के बारे में विस्तार से लिखा है।

एक प्रश्न धर्मों की विविधता के बीच से निकाले जाने वाले सार्वभौमिक संदेश के बारे में किया गया। परम पावन ने उत्तर दिया कि भारत इस मायने में अद्वितीय है कि दुनिया के सभी प्रमुख धर्म यहां फलते-फूलते हैं और परस्पर सम्मान के साथ सह अस्तित्व में रहते हैं। उन्होंने कहा कि हालांकि सुन्नी और शिया परंपराओं के अनुयायियों के बीच कभी-कभी मतभेद होता है, लेकिन उन्होंने भारत में इस तरह के किसी भी संघर्ष के बारे में नहीं सुना है। परम पावन ने इस बात पर बल दिया कि आस्था जो भी हो, दूसरों के लिए एक सर्वमान्य संदेश करुणा है। उन्होंने कहा कि इसी आधार पर धार्मिक सद्भाव पनपता है।

परम पावन से पूछा गया कि ऐसे समय में जब चिकित्सा उपचार एक व्यवसाय हो गया है, सहानुभूति और करुणा के साथ इसको कैसे जारी रखा जा सकता है। उन्होंने उत्तर दिया कि प्रत्येक मानवीय गतिविधि को स्नेह से ओत-प्रोत किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज सभी सात अरब मनुष्यों को एक साथ रहना है, इसलिए मानवता की एकता की भावना पहले से कहीं अधिक आवश्यक है। जब लोग करुणा से प्रेरित होते हैं तो ईमानदारी और सच्चाई स्वाभाविक रुप से सामने आती है। डॉक्टरों और नर्सों का काम दूसरों की मदद करना है, इसलिए करुणा निश्चित रुप से प्रासंगिक है।

हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि उदारता का तालमेल बुद्धि के साथ भी होना चाहिए। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को पैसे देते हैं जो बहुत अधिक शराब पीता है या ड्रग्स का आदी है तो आप उसे खुद को और उसके परिवार को नुकसान पहुंचाने में मदद करते हैं। यह उदार होने के साथ-साथ समझदार और यथार्थवादी भी बने रहने की आवश्यकता का एक उदाहरण है।

वैश्विक आयाम की चुनौतियों का सामना कर रहे विश्व में एक संकीर्ण राष्ट्रीय दृष्टिकोण अनुपयुक्त है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसे एक साथ रहना है। हम एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इस कोविड महामारी के दौरान उत्पन्न हुई समस्याओं से निपटने में लोगों और राष्ट्रों की एक साझा जिम्मेदारी है। हमें सभी मनुष्यों के कल्याण पर विचार करना होगा। भारत में विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न भाषाओं के लोग एक साथ रहते हैं और इस तरह भारत के लोग विविधता में एकता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

परम पावन ने सिफारिश की कि गंभीर मामलों के निदान या उपचार में गलतियों से बचने के लिए डॉक्टरों को एक टीम के रूप में रोगियों की जरूरतों पर चर्चा करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मरीजों को यह महसूस करने के लिए प्रोत्साहित करना जरूरी है कि अस्पताल और उसके कर्मचारी उनकी मदद और सुरक्षा के लिए हैं। साथ ही, यह महत्वपूर्ण है कि डॉक्टर और नर्स को इस बात पर गर्व महसूस करना चाहिए कि वह दूसरों की वास्तविक और व्यावहारिक सेवा के लिए काम करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि जब दुखद अवसरों पर चिकित्सा कर्मी दूसरों की देखभाल करते हुए अपनी जान गंवाते हैं, तो उनके परिवार और दोस्तों को उन पर गर्व महसूस करना चाहिए। उन्हें इस बात का अहसास होना चाहिए कि इस तरह के बलिदान की प्रशंसा करना सही और उचित है। साथ ही मृतक की आत्मा के कल्याण के लिए भी उन्हें प्रार्थना करना चाहिए। परम पावन ने टिप्पणी की कि वह उन चिकित्सा कर्मियों के लिए प्रार्थना करते हैं जिन्होंने अपने काम के दौरान जीवन बलिदान कर दिया है।

जी.वी. प्रसाद ने परम पावन को यह बताते हुए कार्यक्रम का समापन किया कि श्रोतागण उनकी बात सुनकर कितने खुश हुए हैं और उन्हें कितना गर्व महसूस होता है कि परम पावन स्वयं को 'भारत का पुत्र' कहते हैं। उन्होंने 'धन्यवाद और नमस्ते' कहकर सभा को समाप्त करने की घोषणा कर दी। परम पावन ने भी जवाब में कहा, 'धन्यवाद, फिर मिलेंगे।'

• श्री वीरभद्र सिंह के निधन पर शोक श्रद्धांजलि

dalailama.com, ०८ जुलाई २०२१

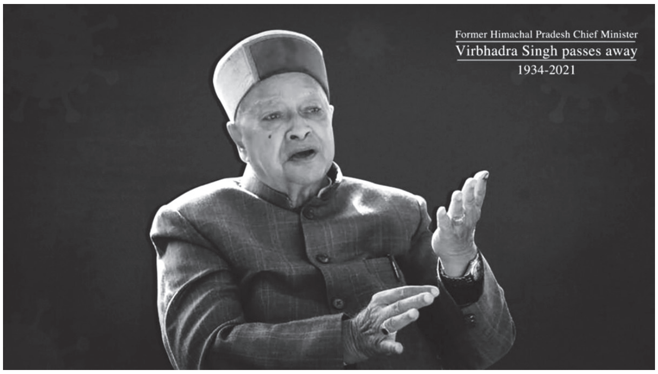

श्री वीरभद्र सिंह जी के निधन पर शोक व्यक्त।

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। ०८ जुलाई की सुबह यह दुखद सूचना मिली कि हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह का निधन हो गया है। सूचना के बाद परम पावन दलाई लामा ने उनकी विधवा श्रीमती प्रतिभा सिंह को अपनी ओर से शोक संवेदना व्यक्त करते हुए पत्र लिखा।

परम पावन ने लिखा, 'खुद को दूसरों की सेवा में समर्पित करते हुए वीरभद्र सिंह ने एक लंबा और सार्थक जीवन जीया। जिस तरह से उन्होंने लोगों की जरूरतों को गहरे स्नेह और करुणा के साथ सुना, उसकी मैंने प्रशंसा की। कई वर्षों से हम एक-दूसरे को जानते थे। उन्होंने लंबी दोस्ती के दौरान मेरे प्रति जो गर्मजोशी दिखाई, उसके लिए मैं व्यक्तिगत रुप से उनका आभारी हूं। ऐतिहासिक रुप से बुशहर की तत्कालीन रियासत और पश्चिमी तिब्बत के लोगों में पड़ोसियों की तरह के घनिष्ठ संबंध रहे हैं। इसी बुशहर रियासत से 'राजा साहब' आते थे। श्री वीरभद्र सिंह यहाँ हिमाचल प्रदेश के लोगों की सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले मुख्यमंत्री रहे हैं। वह निश्चित तौर पर हम सबको बहुत याद आएंगे। परम पावन ने उनके प्रति 'अपनी ओर से प्रार्थना' करते हुए अपने पत्र का समापन किया।'

• महाराष्ट्र में राहत और बचाव के प्रयासों के लिए सहायता की पेशकश

dalailama.com, २५ जुलाई, २०२१

थेकछेन छोलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत। पिछले कुछ दिनों में आई विनाशकारी बाढ़ से महाराष्ट्र में लोगों की जान माल को हुए नुकसान और अनेक लोगों को अपार कष्टों के बारे में आई खबरों से व्यथित परम पावन दलाई लामा ने मुख्यमंत्री उद्धव बालासाहेब ठाकरे को पत्र लिखकर प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के लिए प्रार्थना और संवेदना व्यक्त की है।

उन्होंने लिखा, 'मैं समझता हूं कि राज्य सरकार और उसके अधिकारी भीषण मानसूनी बारिश से प्रभावित लोगों की मदद के लिए हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। महाराष्ट्र के लोगों के साथ एकजुटता प्रदर्शित करने के एक संकेत के तौर पर मैंने दलाई लामा ट्रस्ट को राहत और बचाव प्रयासों के लिए दान देने के लिए कहा है।'

• सोशल मीडिया पर इस सप्ताह चल रहा रुझान: परम पावन १४वें दलाई लामा का ८६वां जन्मदिन दुनिया भर में मनाया गया

tibet.net, ०७ जुलाई, २०२१

पूरे विश्व मे परम पवन दलाई लामा जी के ८६ वी जन्मदिन मनाया।

परम पावन १४वें दलाई लामा के ०६ जुलाई २०२१ को अपने जीवन के ८६ वर्ष पूरे करने के अवसर पर सोशल मीडिया साइटों पर दुनिया भर से हार्दिक बधाई और शुभकामनाओं की बाढ़ आ गई।

जन्मदिन की सुबह परम पावन दलाई लामा के कार्यालय ने परम पावन का वीडियो संदेश जारी किया, जिसमें परम पावन कह रहे हैं, 'मैं अपने उन सभी मित्रों के प्रति गहरी प्रशंसा व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने वास्तव में मेरे प्रति प्यार, सम्मान और विश्वास दिखाया है। अपने लिए मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि मैंने अपना शेष जीवन मानवता की सेवा करने और जलवायु की स्थिति की रक्षा के लिए काम करने में लगा दिया है।

परम पावन कहते हैं कि उनके ८६वें जन्मदिन पर सबसे अच्छा उपहार उनके वे मित्र और अनुयायी होंगे जो करुणा के साथ अहिंसा को आजीवन प्रतिबद्धताओं के रुप में अपनाएंगे। इन मूल्यों को बढ़ावा देना परम पावन दलाई लामा की मुख्य प्रतिबद्धताएं हैं और आगे भी रहेंगी।

सिक्योंग पेन्पा त्सेरिंग के नेतृत्व में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने सिक्योंग हॉल में परम पावन दलाई लामा का आधिकारिक ८६वां जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर तिब्बत टीवी के फेसबुक पेज के माध्यम से इस जश्न का सीधा प्रसारण किया गया।

समारोह के कुछ ही समय बाद ट्विटर पर परम पावन दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई और शानदार श्रद्धांजलि की धूम मच गई। भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी ने पद संभालने के बाद पहली बार अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से तिब्बती आध्यात्मिक नेता को बधाई दी।

पीएम मोदी ने ट्वीट किया, 'परम पावन दलाई लामा से उनके ८६वें जन्मदिन पर बधाई देने के लिए फोन पर बात की। हम उनके लंबे और स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।'

इसी तरह, भारत के कई केंद्रीय मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, राज्य मंत्रियों और राजदूतों ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडलों से परम पावन को जन्मदिन की ढेर सारी शुभकामनाएं दीं।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल @SecBlinken से परम पावन दलाई लामा को हार्दिक बधाई दी। मंत्री ब्लिंकन ने ट्वीट किया, 'परम पावन दलाई लामा को उनके जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए प्रसन्नता हो रही है। वह आगे अनेक वर्षों तक हम सभी को हर दिन नम्रता, करुणा और समझ के साथ जीने के लिए प्रेरित करते रहें।'

अमेरिकी कांग्रेस के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव की स्पीकर नैन्सी पेलोसी ने परम पावन १४वें दलाई लामा के प्रति जन्मदिन की हार्दिक बधाई व्यक्त करते हुए अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल @SpeakerPelosi पर एक वीडियो संदेश जारी किया। स्पीकर पेलोसी ने ट्वीट किया, 'तिब्बती लोगों और तिब्बत के इतने सारे दोस्तों के साथ परम पावन दलाई लामा को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं भेजना सम्मान की बात है। यह परम पावन के साथ ही उनके द्वारा दुनिया को दिए गए आशा और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के संदेश को मनाने का भी एक सुंदर अवसर है।'

ताइवान के राष्ट्रपति त्साई इंग-वेन ने अपने ट्विटर हैंडल @iingwen पर परम पावन दलाई लामा को जन्मदिन की बधाई दी। ताइवान के राष्ट्रपति त्साई इंग-वेन ने ट्वीट किया, 'परम पावन दलाई लामा को ८६वें जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई। इस महामारी के दौरान एक- दूसरे की मदद करने के लिए हमें एक साथ आने का महत्व सिखाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।'

हमेशा की तरह ०६ जुलाई को तिब्बत के अंदर रहनेवाले तिब्बतियों ने अपने जीवन के हर पहलू पर कठोर निगरानी और प्रतिबंधों के बावजूद, प्रतीकात्मक और रचनात्मक संकेतों के माध्यम से परम पावन के जन्मदिन को मनाया। ऐसे ही एक मौके को कैमरे में वीडियो के रूप में कैद कर लिया गया और निर्वासित तिब्बती समुदाय के बीच व्यापक रुप से इसे प्रसारित किया गया।

• तेंगड्रो मठ पर चीन की कार्रवाई के बाद चार तिब्बती भिक्षुओं को 'असाधारण रूप से कठोर सजाएं' दी गईं

tibet.net, ०९ जुलाई, २०२१

ह्यूमन राइट्स वॉच (एचआरडब्ल्यू) संस्था ने एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें, चीनी अधिकारियों द्वारा तिब्बत में रह रहे तिब्बतियों को निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों के साथ संवाद करने और परम पावन दलाई लामा के प्रति वफादारी के किसी भी संकेत को दिखाने से डराने के उद्देश्य से लगातार निर्मम कार्रवाई और आधारहीन उत्पीड़न किए जाने का खुलासा किया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, चीनी अधिकारियों ने पिछले साल 'तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर)' के डिंगरी (टिंगरी) काउंटी में तेंगड्रो मठ पर आक्रामक छापे के बाद चार तिब्बती भिक्षुओं को लंबी जेल की सजा सुनाई थी। छापे की कार्रवाई सितंबर २०१९ में एक सेल फोन की खोज के बाद की गई, जिस फोन को गलती

से ल्हासा के एक कैफे में छोग्याल वांगपो नामक एक भिक्षु ने छोड़ दिया था। ल्हासा के अधिकारियों ने डिवाइस की जांच में इसमें कथित तौर पर ‘अवैध’ माने जाने वाले संदेश बरामद किए थे।

चीनी सरकार की कार्यवाही के बाद चार तिब्बती भिक्षुओं को “असाधारण रूप से कठोर दण्ड” दिए गए।

संदेशों से पता चलता है कि ४६ वर्षीय भिक्षु और तेंगड्रो मठ के नेता चोएग्याल वांगपो ने नेपाल में रहने वाले तिब्बतियों को २०१५ के भूकंप के बाद हुए नुकसान के मुआवजे के तौर पर मौद्रिक राहत भेजी थी। ये तिब्बती मूल रूप से डिंगरी के थे। ल्हासा पुलिस ने तुरंत चोएग्याल वांगपो को हिरासत में ले लिया, कथित तौर पर उसे पीटा और उनसे पूछताछ की।

सुरक्षा बल वांगपो को ल्हासा से हिरासत में लेने के बाद उनके पैतृक गांव ड्रैनक पहुंचे और गांव और तेंगड्रो के आसपास के मठ पर छापा मारा। छापेमारी के बाद सुरक्षा बलों ने क्षेत्र में २० तिब्बतियों को विदेश में रहने वाले तिब्बतियों से संपर्क रखने, नेपाल में तिब्बतियों को भेजी गई भूकंप राहत में योगदान देने और दलाई लामा की तर्स्वीरें रखने के संदेह में गिरफ्तार कर लिया। बाद में चीनी अधिकारियों ने तुरंत मठ के भिक्षुओं और गांव के निवासियों के लिए दैनिक राजनीतिक शिक्षा सत्र का आयोजन किया।

पुलिस की छापेमारी के तीन दिन बाद तेंगड्रो मठ के एक भिक्षु और ड्रैनक के निवासी लोबसांग ज़ोएपा ने अपने परिवार और समुदाय के प्रति अधिकारियों के व्यवहार से क्षुब्ध होकर आत्महत्या कर ली। घटना के कुछ देर बाद गांव का इंटरनेट कनेक्शन काट दिया गया।

एचआरडब्ल्यू की रिपोर्ट के अनुसार, हिरासत में लिए गए अन्य भिक्षुओं को बिना किसी मुकदमे के कई महीनों तक बंद रखा गया और इसके बाद उनसे किसी भी राजनीतिक गतिविधि में शामिल न होने का वादा लेकर रिहा कर दिया गया। लेकिन उन्हें मठ में फिर से शामिल होने की अनुमति नहीं दी गई।

चोएग्याल वांगपो सहित चार भिक्षुओं पर शिगात्से इंटरमीडिएट पीपुल्स कोर्ट ने सितंबर २०२० में अज्ञात आरोपों में गुप्त रूप से मुकदमा चलाया और उन्हें असाधारण रूप से कठोर सजा दी गई। चोएग्याल वांगपो को २० साल की सजा सुनाई गई थी; ४३ वर्षीय लोबसांग जिनपा को १९ वर्ष; पुलिस की पिटाई से गंभीर रूप से घायल हुए ६४ वर्षीय नोरबू डोंड्रब को १७ साल की सजा और ३६ वर्षीय नगावांग येशे को ०५ साल जेल की सजा सुनाई गई।

एचआरडब्ल्यू ने कहा, ‘टेंगड्रो मामले में उपलब्ध जानकारी साफ तौर पर बताती है कि प्रतिवादियों ने किसी भी महत्वपूर्ण आपराधिक गतिविधि, यहां तक कि चीनी कानून के तहत भी परिभाषित किसी आपराधिक गतिविधि में भाग नहीं लिया था।’

अधिकार समूह ने कहा कि तिब्बत में रहने वाले तिब्बती हमेशा राजनीतिक रूप से संवेदनशील टिप्पणी करने से बचते हैं। वे नियमित रूप से फोन या टेक्स्ट संदेश द्वारा अन्य देशों के लोगों के साथ संवाद करते हैं, जो वर्तमान में किसी भी चीनी कानून के तहत अवैध नहीं है। इस मामले में विदेश में धन भेजने का भी आरोप लगा। यह कृत्य भी चीनी कानून के तहत तब तक अवैध नहीं है, जब तक इसमें धोखाधड़ी, अवैध संगठन के साथ संपर्क, अलगाववाद को प्रोत्साहित करने या जासूसी जैसे विशिष्ट अपराध का पुट शामिल नहीं हो। इस मामले में तो इनमें से कोई भी ऐसा कर्म प्रतीत नहीं होता है।

• तिब्बत में दलाई लामा का जन्मदिन मनाते कई गिरफ्तार

tibet.net,१९ जुलाई, २०२१

चीनी अधिकारियों ने इस महीने की शुरुआत में तिब्बत में परम पावन दलाई लामा का ८६वां जन्मदिन मनाने के आरोप में चीन के सिचुआन प्रांत में शामिल तिब्बत के पारंपरिक खाम प्रांत के कर्ज़े से कई तिब्बतियों को गिरफ्तार किया है।

एक पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी गोलोग जिग्मे के अनुसार, उम्र के ४० के दशक में चल रहे कुंचोक ताशी नाम के एक व्यक्ति और जापो नाम की एक महिला को कर्ज़े (चीनी: गंजी) तिब्बती स्वायत्त प्रांत के कयागलुंग शहर से हिरासत में लिया गया।

इस जोड़े को एक सोशल मीडिया समूह का सदस्य होने के कारण गिरफ्तार किया गया, जिसने परम पावन की तर्स्वीरें, वीडियो साझा किए और अन्य लोगों को परम पावन दलाई लामा के जन्मदिन पर प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया। गिरफ्तारी की खबर के अलावा और कोई जानकारी नहीं मिल पाई है।

सूत्र ने आगे कहा, ‘परम पावन दलाई लामा के जन्मदिन के आसपास किसी समय २० या ३० और तिब्बतियों को गिरफ्तार किए जाने का संदेह है। संचार बंद होने और चीनी अधिकारियों द्वारा कड़ी निगरानी के कारण तिब्बतियों के इस समूह की गिरफ्तारी के बारे में बहुत कम जानकारी है।’

२०१६ में दलाई लामा का ८०वां जन्मदिन मनाने के आरोप में तिब्बतियों को सजा सुनाई गई:

चीन का दावा है कि तिब्बतियों को अभिव्यक्ति की आजादी है और तिब्बत में धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता का पालन करने की आजादी है, लेकिन चीनी सरकार ने परम पावन दलाई लामा के प्रति श्रद्धा की किसी भी अभिव्यक्ति पर पूरी तरह से कार्रवाई की है। यहां तक कि उनकी तस्वीर रखना भी अपराध माना गया है।

२०१६ में दुनिया भर के तिब्बतियों ने परम पावन दलाई लामा के ८०वें जन्मदिन को भव्य रूप से मनाया। तिब्बत में भी समारोहों का आयोजन किया गया था। ऐसा ही एक आयोजन नगाबा में करने के लिए १० तिब्बतियों को सजा सुनाई गई थी। ०६ दिसंबर २०१६ को नगाबा प्रिफेक्चर के बरखम में इंटरमीडिएट पीपुल्स कोर्ट ने १० तिब्बती भिक्षुओं और आम नागरिकों को परम पावन के ८० वर्ष के होने के उत्सव में भाग लेने के लिए पांच से १४ साल तक की जेल की सजा सुनाई। इनमें कीर्ति मठ के ५० वर्षीय भिक्षु द्रुकद्र को १४ साल की सजा; कीर्ति मठ के ४४ वर्षीय भिक्षु लोबसांग खेदूप को १३ वर्ष की सजा सुनाई गई; २९ वर्षीय कीर्ति मठ के भिक्षु लोसांग गेपेल को १२ साल की सजा सुनाई गई थी; कीर्ति मठ के ही ४१ वर्षीय भिक्षु लोद्रो को ०९ साल की सजा; ल्हादे गाबमा निवासी ४८ वर्षीय बोन्को क्यी को ०७ साल की सजा सुनाई गई थी; नगाबा के त्रोत्सिक इलाके के डोवा गांव के त्सुल्ट्रिम को ०६ साल की सजा सुनाई गई थी और ३५ वर्षीय अक्याक्य (अजाजा) को ०५ साल की सजा सुनाई गई।

२०१३ में पूर्वी तिब्बत के तावू क्षेत्र में परम पावन दलाई लामा के ७८वें जन्मदिन की प्रार्थना और जश्न मनाने के लिए एकत्रित स्थानीय सभा में एक दर्जन से अधिक तिब्बतियों को गोली मार दी गई थी। उस समय चीनी अधिकारियों ने निहत्थे तिब्बतियों पर गोलियां चलाईं थीं।

• तिब्बतियों ने चीन के पंचेन लामा को नजरअंदाज किया;

भक्ति दिखाने को कहा दलाई लामा द्वारा चुने गए पंचेन लामा के विरुद्ध बीजिंग द्वारा ग्यालत्सेन नोरबू को १९९५ में चुना गया जिसके प्रति श्रद्धा प्रकट करने को कहा गया था। नोरबू एक युवा लड़के थे, जो अपने परिवार के साथ चीनी हिरासत में गायब हो गए

rfa.org, २६ जुलाई २०२१

तिब्बतियों ने चीन के पंचेन लामा की अनदेखी की

इस महीने सिचुआन में एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन द्वारा भेजे गए एक तिब्बती बौद्ध नेता को आम तिब्बतियों द्वारा उस समय नजरअंदाज कर दिया गया, जब उन्हें अधिकारियों द्वारा उस बौद्ध नेता का अभिवादन करने के लिए कहा गया। तिब्बती सूत्र कहा कि उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए केवल कुछ गिने- चुने अधिकारी ही मौजूद थे।

आरएफए द्वारा क्षेत्र के अंदर से ही प्राप्त एक टेक्स्ट संदेश के अनुसार, १९९५ में चीन द्वारा तिब्बत के पंचेन लामा के रूप में चुने गए ग्यालत्सेन नोरबू-क्षेत्र के भीतर से १२ जुलाई को एक धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए सिचुआन प्रांत के कर्जे (गांज़ी) तिब्बती स्वायत्त प्रिफेक्चर गए थे।

आरएफए के सूत्र ने कहा, 'उन्हें नगाबा बरखम, ज़ोएगे और खुंगचु की यात्रा करते हुए भी देखा गया था, जहाँ तिब्बतियों को आने और उनका अभिवादन करने के लिए कहा गया था। लेकिन जहां अन्य धार्मिक हस्तियों के आने पर तिब्बती उनका जोरदार सम्मान करते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लाइन लगा देते हैं, वहीं ठीक इसके विपरीत इस कार्यक्रम में कोई भी तिब्बती उनका स्वागत करने के लिए नहीं आया।'

सूत्र ने कहा, 'केवल वही लोग उनसे मिलने आए, जिनकी उपस्थिति की व्यवस्था चीनियों द्वारा विशेष रुप से की गई थी।'

सूत्र ने कहा कि जिन क्षेत्रों में भिक्षु का दौरा हुआ वहां के स्थानीय तिब्बतियों द्वारा 'चीनी पंचेन लामा' कह कर उनका व्यापक तौर पर उपहास उड़ाया गया। उन क्षेत्रों के निवासियों के आवागमन पर अधिकारियों ने प्रतिबंध लगा दिया और लोगों को सड़कों को कारों से मुक्त रखने के लिए कहा गया था।

आरएफए से बात करते हुए एक पूर्व तिब्बती राजनीतिक कैदी शेल गेधुन त्सेरिंग, जो अब ऑस्ट्रेलिया में रह रहे हैं, ने दौरा किए गए क्षेत्रों के सूत्रों के हवाले से पंचेन के क्षेत्र के दौरे की पुष्टि की।

त्सेरिंग ने कहा, 'घर वापस आने वाले संपर्क के लोगों ने मुझे बताया कि क्षेत्र के मठों में महंतों और धार्मिक हस्तियों को पंचेन लामा की अगवानी करने और उनका अभिवादन करने के लिए मजबूर किया गया था। साथ ही उनके साथ तस्वीरें खिंचवाने का भी आदेश दिया गया था।'

भारत स्थित तिब्बती मानवाधिकार और लोकतंत्र केंद्र, धर्मशाला के निदेशक त्सेरिंग त्सोमो ने कहा कि चीनी सरकार अब अक्सर राजनीतिक प्रचार और प्रसार उद्देश्यों के लिए तिब्बती धार्मिक हस्तियों का उपयोग करती है।

त्सोमो ने कहा, 'इन यात्राओं को चीनी सरकार की प्रत्यक्ष निगरानी में कोरियोग्राफ किया जाता है, और नोरबू जो कुछ भी कहते हैं या करते हैं उसका उद्देश्य केवल चीन की सत्तारुढ़ कम्युनिस्ट पार्टी के एजेंडे को आगे बढ़ाना है। वह केवल एक प्रवक्ता के रूप में कार्य करते हैं।'

चीनी हिरासत में गायब

ग्यालत्सेन (चीनी :, ग्यानकेन) नोरबू को मई १९९५ में चीन द्वारा पंचेन लामा के रूप में नामित किया गया था। उन्हें तिब्बत के निर्वासित आध्यात्मिक नेता दलाई लामा द्वारा चुने गए एक बालक के विरोध में चुना गया। दलाई लामा द्वारा चुने गए बालक को उनके परिवार के साथ चीनी हिरासत में गायब कर दिया गया।

तिब्बती परंपरा यह मानती है कि वरिष्ठ बौद्ध भिक्षु और अन्य सम्मानित धार्मिक नेता इस शरीर को छोड़ने के बाद एक बच्चे के शरीर में पुनर्जन्म लेते हैं।

चीनी अधिकारियों को अपने चुने पंचेन लामा को चीन में तिब्बती बौद्ध धर्म के आधिकारिक चेहरे के रूप में स्वीकार करने के लिए तिब्बतियों को राजी करने में कठिनाई हो रही है। हालांकि, आम तिब्बती और मठों के भिक्षु पारंपरिक रुप से दलाई लामा के प्रति वफादार रहे हैं, लेकिन चीनी पंचेन लामा को स्वीकार करने या उनकी अगवानी करने को लेकर वह भी अनिच्छुक दिखाई दे रहे हैं।

बीजिंग ने हाल के वर्षों में अन्य तिब्बती धार्मिक नेताओं की पहचान को नियंत्रित करने का अभियान चलाया है। उसका कहना है कि अगले दलाई लामा का चयन चीनी कानून के तहत ही किया जाएगा। वर्तमान दलाई लामा चीनी शासन के खिलाफ १९५९ के असफल तिब्बती विद्रोह के बाद भारत में निर्वासन में रह रहे है।

हालांकि, दलाई लामा खुद कहते हैं कि अगर वे पुनर्जन्म लेते हैं, तो उनके उत्तराधिकारी का जन्म चीनी नियंत्रण से बाहर के देश में ही होगा।

आरएफए की तिब्बती सेवा के लिए संग्याल कुंचोक द्वारा रिपोर्ट की गई। अनुवाद- तेनज़िन डिकी। अंग्रेजी में लेखन- रिचर्ड फिनी।

• सिक्योंग ने अमेरिकी विदेश विभाग के अधिकारियों के साथ वर्चुअल बैठक में भाग लिया

tibet.net, ३१, जुलाई २०२१

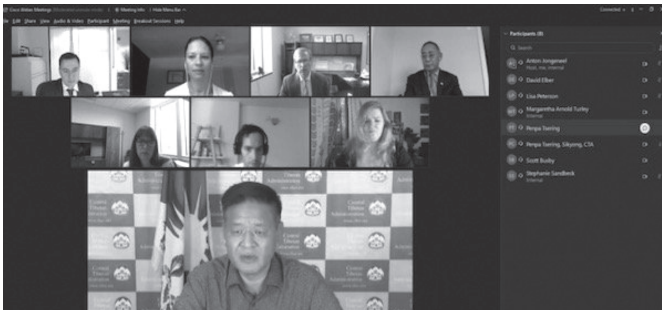

सिक्योंग ने अमरीकी विदेश विभाग के नेतृत्व के साथ आभासी बैठक में भाग लिया।

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने शुक्रवार, ३० जुलाई २०२१ की सुबह अमेरिकी विदेश विभाग के लोकतंत्र, मानवाधिकार और श्रम ब्यूरो के प्रमुखों के साथ एक वर्चुअल बैठक में हिस्सा लिया।

बैठक में अमेरिकी विदेश विभाग के कार्यवाहक सहायक सचिव लिसा पीटरसन, कार्यवाहक प्रधान उप सचिव स्कॉट बुस्बी, विशेष सहायक एंटोन जोंगनेल, स्टेफ़नी सैंडबेक, डेविड एल्बर और मार्गरेट टर्ली ने भाग लिया।

सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने डीआईआईआर के सचिवों- कर्मा चोयिंग और छेमी

त्सेयांग और तिब्बत कार्यालय, वाशिंगटन डीसी के प्रतिनिधि न्गोडुप त्सेरिंग के साथ वर्चुअल बैठक में भाग लिया।
घंटे भर की बैठक उपयोगी रही, जहां सिक्योंग ने चीन-तिब्बत संघर्ष का समाधान करने और तिब्बती प्रवासियों के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए अपना दृष्टिकोण और कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मुक्त हस्त आर्थिक सहायता के लिए अमेरिकी सरकार को धन्यवाद देते हुए सिक्योंग ने कहा कि 'भारत और अमेरिका की मदद के बिना तिब्बतियों की स्थिति उतनी मजबूत नहीं होगी जितनी अभी है।' उन्होंने सभी जरुरतों में उनकी निरंतर मदद का आग्रह किया और महामारी के कम होने पर अमेरिका जाने और वहां के अधिकारियों से व्यक्तिगत रूप से मिलने की उम्मीद व्यक्त की।
विदेश विभाग के अधिकारियों ने सिक्योंग को चुनावी जीत पर बधाई दी और उन्हें शुभकामनाएं देते हुए मिलकर काम करने की इच्छा व्यक्त की। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि कुछ हफ्तों में तिब्बती मुद्दों के लिए एक विशेष समन्वयक नियुक्त किया जाएगा।
प्रतिनिधि न्गोडुप त्सेरिंग ने तिब्बत के लिए उनके दृढ़ और भावुक समर्थन के लिए डीआरएल नेतृत्व को धन्यवाद दिया और कहा कि वह भविष्य में निरंतर समर्थन प्राप्त करने के लिए इच्छुक रहेंगे।

• सीटीए के प्रवक्ता ने शी से तिब्बत यात्रा के बाद चीन-तिब्बत वार्ता फिर से शुरू करने को कहा

tibet.net, २३ जुलाई २०२१

सीटीए के प्रवक्ता तेनज़िन लेक्शे।

धर्मशाला। चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने २१-२३ जुलाई तक तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) का आश्चर्यजनक रूप से दौरा किया है। २०१३ में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) के राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार संभालने के बाद से यह इस क्षेत्र की उनकी पहली यात्रा थी।

कहा जाता है कि गुरुवार को तिब्बत की राजधानी ल्हासा आने से पहले शी ने भारत के अरुणाचल प्रदेश की सीमा से लगे क्षेत्र निंगत्री का दौरा किया था। सोशल मीडिया पर जारी वीडियो क्लिप में शी पोटाला पैलेस के सामने सड़क पर लोगों से बात करते नजर आ रहे हैं. शी के साथ टीएआर के पार्टी सचिव वू यिंगजी और टीएआर के अध्यक्ष चे दल्हा और अन्य अधिकारी थे।
यात्रा की खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता, अतिरिक्त सचिव तेनज़िन लेक्षेय ने कहा:

'चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने बड़ी धूमधाम से ल्हासा और निंगत्री का दौरा किया। मैं समझता हूं कि राष्ट्रपति के रूप में यह उनकी पहली तिब्बत यात्रा है। इस यात्रा से उन्हें तिब्बत की वास्तविक आकांक्षाओं को समझना चाहिए और विचार करना चाहिए कि तिब्बत मुद्दा एक लंबे समय से लंबित मुद्दा है जो अभी भी अनसुलझा है। उन्हें तिब्बती प्रतिनिधियों और चीनी सरकार के बीच बातचीत फिर से शुरू करनी चाहिए।'

कई लोग मानते हैं कि यह यात्रा विवादास्पद १७ सूत्री समझौते की ७०वीं वर्षगांठ से जुड़ी है, जिस पर तिब्बतियों को १९५१ में चीनी सरकार के दबाव में हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया था। २०११ में जब शी पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) के उपाध्यक्ष थे, तब उन्होंने ल्हासा की यात्रा की थी। इससे पहले की उनकी वह ल्हासा यात्रा समझौते की ६०वीं वर्षगांठ के अवसर पर हुई थी। शी १९९८ में फ़ुज़ियान प्रांत के पार्टी सचिव के रूप में भी तिब्बत का दौरा कर चुके हैं।

ल्हासा में शी ने कथित तौर पर पोटाला महल के सामने जनता से कहा कि 'जब तक हम कम्युनिस्ट पार्टी का अनुसरण करते रहेंगे, जब तक हम चीनी विशेषताओं वाले समाजवाद के मार्ग का पालन करते रहेंगे, तब तक हम निश्चित रुप से चीनी राष्ट्र के महान कायाकल्प प्राप्त करने में सक्षम होंगे।' उन्होंने यह भी कहा कि 'पूरे तिब्बत में सभी नस्लीय समूह भविष्य में एक सुखी जीवन की ओर बढ़ रहे हैं। इस बात को लेकर हम भी आपके जैसे ही आत्मविश्वास से भरे हैं।' निंगत्री में, उन्होंने मेनलिंग हवाई अड्डे का दौरा किया और यारलुंग त्सांग्पो और निंगत्री रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया।

• मूल को फिर से देखने और मुद्दे को मजबूत करने के लिए आइटीसीओ का अभियान

tibet.net, ०५ जुलाई, २०२१

पंडित शिवनारायण उपाध्याय जी।

राजस्थान। भारतीय जनता के भीतर अपनी जड़ों को फिर से मजबूत करने और तिब्बती आंदोलन को और मजबूती प्रदान करने के लिए भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय ने कोविड मामलों में तेजी से गिरावट को देखते हुए सभी एहतियाती उपायों के साथ २८ जून २०२१ से ०२ जुलाई २०२१ तक राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर का एक सप्ताह का दौरा किया। इस अभियान की शुरुआत पिछले साल बेंगलुरु में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज) के संस्थापक और निदेशक डॉ. देवी प्रसन्ना पटनायक के अभिनंदन समारोह के साथ शुरु किया गया था। इन कार्यक्रमों का आयोजन बाद में कोलकाता, असम और अरुणाचल प्रदेश में भी किया गया था जो कोविड- १९ महामारी की दूसरी लहर के उभरने आने के पहले तक अच्छी तरह से चला।
इस कार्यक्रम के पीछे मुख्य उद्देश्य भारत-तिब्बत मैत्री समाज के कुछ प्रमुख सदस्यों से मिलना था, जिन्होंने तिब्बत मुक्ति साधना के वृक्ष को लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुर्भाग्य से उनमें से बहुत कम ही अब हमारे बीच मौजूद हैं। क्योंकि कई लोग अन्याय के खिलाफ सच्चाई की इस यात्रा में अपने

पदचिन्हों को छोड़कर इस संसार से विदा हो गए। परम आदरणीय पंडित शिव नारायण उपाध्यायजी उन प्रमुख हस्तियों में से एक हैं, जिन्होंने स्वर्गीय श्री अमर कृष्ण व्यास, श्री महेंद्र प्रसाद घेनवा, श्री उमा शंकर शर्मा और कई अन्य लोगों के साथ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री उपाध्याय जी अब ९१ वर्ष के हैं और राजस्थान के कोटा में निवास करते हैं। कुछ महीने पहले उन्हें लकवा का दौरा पड़ा और उसके बाद वे कोविड- १९ से संक्रमित हो गए, लेकिन उन्होंने अपने आत्मबल से वायरस को परास्त कर लिया है और अब वह लकवा के लक्षणों से काफी संतोषजनक ढंग से उबर रहे हैं।

आईटीसीओ पिछले कुछ हफ्तों से उनकी बहू सुश्री वंदना उपाध्याय के संपर्क में है और उनके स्वास्थ्य की स्थिति को अपडेट कर रहा है और श्री उपाध्यायजी से मिलने की संभावना के साथ-साथ सुरक्षा भी तलाश रहा है। जैसा कि हुआ, इससे अधिक उत्साहजनक और क्या हो सकता है कि कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज -इंडिया के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुरेंद्र कुमार ने ३० जून २०२१ को श्री शिव नारायण उपाध्याय जी को उनके आवास पर जाकर उनका अभिनंदन करने के हमारे अनुरोध को बिना देरी किए सहर्ष स्वीकार किया। श्री सुरेंद्र जी बिना किसी झिझक के मुजफ्फरपुर, बिहार से राजस्थान के कोटा तक की यात्रा तक साथ रहे।

हमारे एक प्रश्न का श्री शिव नारायण उपाध्याय जी ने उत्तर दिया, उससे उनके गहरे आत्म विश्वास का पता चलता है। उन्होंने कहा कि तिब्बत त्रिविष्टप है - जिसका अर्थ है, ब्रह्मांड का मुकुट है, जिस पर चीनी कम्युनिस्ट शासन द्वारा अन्यायपूर्ण तरीके से कब्जा किया गया है। उन्होंने पुष्टि की कि जिस तरह से दुनिया में हर जगह चीजें विकसित हो रही हैं, उससे उन्हें यकीन है कि तिब्बत अपनी महिमा और स्थिति को फिर से हासिल कर सकेगा। इस तरह वे आराम से अपनी अंतिम सांस ले सकेंगे। उन्होंने परम पावन दलाई लामा के चरणों में यह कहते हुए विनम्रतापूर्वक अपना प्रणाम अर्पित किया कि उनकी भौतिक आभा स्वयं अनंत समस्याओं का समाधान कर सकती है और उनका ज्ञान दिव्य सत्य का मार्ग दिखा सकता है, जिसके लिए कुशल शिक्षा और साधना की आवश्यकता होती है।

श्री सुरेंद्र कुमार ने पंडित शिव नारायण उपाध्याय जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आईटीएफएस और कई अन्य भारत-तिब्बत समर्थक समूह आपके योगदान से बहुत प्रेरणा लेंगे और यह वृत्तचित्र की सुनहरी यादों में लिखा जाएगा जो मानवता की सेवा में बहुत आगे तक जाएगा। .

योजना के अनुसार, यात्रा के इस चरण में भारत-तिब्बत संवाद मंच, भारत-तिब्बत संवाद संघ और भारत-तिब्बत मैत्री संघ के प्रतिष्ठित सदस्यों ने इस यात्रा के सदस्यों- श्री सुरेंद्र कुमार, श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम और तेनज़िन जॉर्डन से मुलाकात की। इन बैठकों के दौरान, चीन की कम्युनिस्ट सरकार और उसके छिपे हुए एजेंडे के असली चेहरे को बेनकाब करने के लिए रणनीतिक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए कई मुद्दों पर चर्चा, योजना और दस्तावेजीकरण किया गया।

• भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा का ८६वां जन्मदिन मनाया

tibet.net, ०८ जुलाई २०२१

तिब्बत सपोर्ट ग्रुप ने परम पवन जी का जन्मदिन मनाया।

नई दिल्ली। दुनिया भर में शांति, प्रेम और करुणा के दूत के रूप में पूजनीय परम पावन १४वें दलाई लामा मंगलवार ०६ जुलाई २०२१ को ८६ वर्ष के हो गए। उनके अनुयायी, मित्र और शुभचिंतकों द्वारा परम पावन १४वें दलाई लामा की ८६वीं जयंती का शुभ अवसर दुनिया भर में मनाया गया। वैश्विक कोविड-१९ महामारी के प्रभाव के बावजूद तिब्बतियों और अन्य लोगों के साथ, भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने भी परम पावन दलाई लामा के जीवन और संदेश का जश्न मनाते हुए देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन करके इस शुभ अवसर को मनाया।

परम पावन दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन की पूर्व संध्या पर भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने 'परम पावन १४वें दलाई लामा: प्रेम, शांति और करुणा की दिव्य आत्मा' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार के दौरान केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ (वाराणसी) के कुलपति प्रो. गेशे न्गवांग समतेन अतिथि वक्ता थे। इस दौरान आरएसएस के क्षेत्रीय प्रचार प्रमुख श्री पदम सिंह जी, जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय, बिहार के पूर्व कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह, उत्तराखंड से प्रख्यात शिक्षाविद् और प्रेरक डॉ. (श्रीमती) रश्मि त्यागी रावत और भारत तिब्बत समन्वय कार्यालय, दिल्ली के उप समन्वयक श्री तेनज़िन जॉर्डन उपस्थित रहे।

भारत तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) ने आरएसएस के वरिष्ठ नेता और बीटीएसएम के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार के मार्गदर्शन में ०६ जुलाई २०२१ को परम पावन दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक फेसबुक लाइव वेबिनार का आयोजन किया। वर्ल्ड एलायंस ऑफ बौद्ध, थाईलैंड के अध्यक्ष वें. डॉ. पोर्नचाई पलावधम्मो, ग्लोबल लीडर ऑफ पीस (अमेरिका) की प्रख्यात वैज्ञानिक और नेता डॉ मधु कृष्ण, और मुख्य अतिथि भूटान के आचार्य किनले ग्यालत्सेन खेंपो थे जबकि. केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की पूर्व गृह मंत्री श्रीमती ग्यारी डोलमा, बीटीएसएम के कार्यकारी अध्यक्ष श्री हरजीत सिंह ग्रेवाल, बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव- (कार्यक्रम प्रमुख भी) श्री पंकज गोयल और बीटीएसएम के राष्ट्रीय सचिव (कार्यक्रम संयोजक भी) श्री विजय शर्मा, वेबिनार के विशिष्ट अतिथि थे।

बिहार, मेरठ, असम, दिल्ली और अरुणाचल प्रदेश में भारत तिब्बत सहयोग मंच के क्षेत्रीय अध्यायों ने भी परम पावन १४वें दलाई लामा का जन्मदिन मनाया।

भारत- तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) ने अपने क्षेत्रीय चैप्टर के माध्यम से इस अवसर को भारत के विभिन्न हिस्सों में मनाया। इसने हजारीबाग (झारखंड), अहमदाबाद, सूरत, मेहसाणा, पालनपुर और दाहोद (गुजरात), जोधपुर (राजस्थान), भंडारा (महाराष्ट्र), मुजफ्फरपुर और भागलपुर (बिहार) और मैसूर (कर्नाटक) में कार्यक्रम आयोजित किए।

असम में एक तिब्बत समर्थक समूह 'फ्री तिब्बत: वॉयस फ्रॉम असम' ने एक फेसबुक लाइव सत्र का आयोजन किया, जो 'मानवता के लिए निरंतर आशा की किरण यानी तिब्बत के महान १४वें दलाई लामा' को समर्पित था। असमिया लेखक श्री बिपुल देउरी, तिब्बत कार्यकर्ता श्रीमती नोवानिता शर्मा और कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री सौम्यदीप दत्ता सत्र के दौरान

वक्ता थे।
पश्चिम बंगाल में परम पावन दलाई लामा का जन्मदिन कोलकाता में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया की क्षेत्रीय संयोजक और अधिवक्ता (श्रीमती) रूबी मुखर्जी के नेतृत्व में सालुगुरा में मनाया गया। इस अवसर पर हिमालयन कमेटी फॉर एक्शन ऑन तिब्बत (हिमकैट) के राष्ट्रीय सचिव श्री सोनम ल्हुंदुप लामा द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था।
समता सैनिक दल (एसएसडी) ने अपने राष्ट्रीय मुख्य आयोजक, मार्शल सुनील सारिपुत्त के नेतृत्व में महाराष्ट्र के नागपुर में एसएसडी केंद्रीय कार्यालय में परम पावन दलाई लामा का ८६वां जन्मदिन मनाया।
अंतरराष्ट्रीय भारत-तिब्बत सहयोग समिति (एबीटीएसएस) ने उत्तर प्रदेश के मेरठ में परम पावन का जन्मदिन मनाया।
भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) ने परम पावन १४वें दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन को भारत के विभिन्न हिस्सों में 'विश्व शांति और संकल्प दिवस' के रूप में मनाया। इसने कुशीनगर (उत्तर प्रदेश), जम्मू-कश्मीर, अरुणाचल प्रदेश, असम, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु में कार्यक्रमों का आयोजन किया। बीटीएसएम ने इस अवसर पर तंजानिया में अपने अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पिट्टाला सत्यनारायण के नेतृत्व में समारोह आयोजित किया।
भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने परम पावन १४वें दलाई लामा की ८६वीं जयंती मनाते हुए परम पावन को शुभकामनाएं दीं और उनके लंबे और स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना की कि वह हम सभी को प्रेम, शांति, करुणा और अहिंसा के मार्ग पर अग्रसर करें। तिब्बत मुक्ति साधना की ज्योति प्रज्ज्वलित करके उन्होंने तिब्बत के लिए स्वतंत्रता और न्याय के लिए प्रार्थना की और परम पावन १४वें दलाई लामा और तिब्बतियों की जल्द से जल्द तिब्बत वापसी की प्रार्थना की।

• भारत तिब्बत संवाद मंच ने परम पावन दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन समारोह का भव्य आयोजन किया

tibet.net, ०९ जुलाई, २०२१

भारत तिब्बत संवाद मंच ने परम पवन जी का जन्मदिन मनाया।

०६ जुलाई २०२१ कुशीनगर। परम पावन दलाई लामा के ८६वें जन्मदिन को दुनिया भर के उनके शुभचिंतकों ने हर्षोल्लास के साथ मनाया। कुशीनगर में भारत-तिब्बत संवाद मंच ने नामग्याल मठ में इस शुभ अवसर का एक भव्य उत्सव का आयोजन किया।
इस उत्सव में थाईलैंड, वियतनाम, कंबोडिया, म्यांमार, श्रीलंका और भारत सहित विभिन्न देशों का प्रतिनिधित्व करने वाले भिक्षुओं ने भाग लिया। कुशीनगर के विधायक श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी मुख्य अतिथि थे, जबकि विशिष्ट अतिथि भारत-तिब्बत संवाद मंच, लखनऊ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ संजय शुक्ला थे।
भारत-तिब्बत संवाद मंच, कुशीनगर के क्षेत्रीय संयोजक डॉ. शुभलाल शाह ने अपने स्वागत भाषण में आगत अतिथियों सहित सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और बौद्ध धर्म समेत अनेक मतों के ऐसे शुभ तीर्थ स्थल पर इस तरह के एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन करने पर अपनी खुशी का इजहार किया।
विशिष्ट अतिथि वक्ताओं में से एक पीजी कॉलेज, कुशीनगर के बौद्ध अध्ययन विभाग की डॉ. ममतामणि त्रिपाठी ने भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक संबंधों और दलाई लामा की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने 'दलाई' और 'लामा' शब्दों के गढ़ने के संबंध में प्राथमिक जानकारी के बारे में भी बातें कीं। उन्होंने अपने पेशेवर गरिमा और वाक्पटुता से तिब्बत के अतीत, वर्तमान और भविष्य की संभावनाओं की एक समग्र तस्वीर प्रस्तुत की।
क्षेत्र के एक उल्लेखनीय सामाजिक कार्यकर्ता श्री वीरेंद्रनाथ त्रिपाठी ने भी परम पावन का अभिनंदन किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि तिब्बत की संप्रभुता निश्चित रुप से प्राप्त होकर रहेगी।
अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संघ के अध्यक्ष भंते महेंद्र ने उन बौद्ध मूल्यों और रीति-रिवाजों पर प्रकाश डाला जो परम पावन का प्रतिनिधित्व करते हैं और जिनका परम पावन प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने एक राजा की कहानी सुनाई, जिसने एक चंदन व्यापारी को केवल इसलिए फांसी देने का आदेश दिया था क्योंकि वह व्यापारी भविष्य में राजा की मृत्यु के उपरांत उनके दाह संस्कार में चिता के लिए अपनी चंदन की लकड़ी की बिक्री से अच्छी कमाई होने की संभावना देख रहा था। मतलब यह कि राजा चाहे कितनी भी कोशिश कर ले अपनी मौत से नहीं बच सकता था, क्योंकि जीवन में एक न एक दिन उसकी मौत निश्चित थी। यह वास्तव में प्राणी की मृत्यु की निश्चितता का संकेत देता है।
भारत-तिब्बत संवाद मंच के अध्यक्ष डॉ. संजय शुक्ला ने मानवता के अस्तित्व के लिए तिब्बत की आवाज को तेज करने और इसके महत्व को उजागर करने में बीटीएसएम की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत-तिब्बत और तीर्थस्थल कैलाश-मानसरोवर तक भारतीयों की पहुंच और उनकी सुरक्षा के संदर्भ में अतीत के तथ्यों की चर्चा की। उन्होंने आगत प्रतिभागियों से इस संदेश को फैलाने का आग्रह किया कि तिब्बत का मुद्दा न केवल उसकी अपनी पहचान और अस्तित्व के लिए है, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह पूरे एशिया और विशेष रुप से दक्षिण एशिया के पारिस्थितिकी और आजीविका से जुड़ा है।
कार्यक्रम के अंत में, मुख्य अतिथि श्री रजनीकांत मणि त्रिपाठी ने अपनी हर्षपूर्ण आकांक्षाओं को व्यक्त करते हुए आग्रह किया कि बौद्ध साधन के लिए अति महत्वपूर्ण स्थान- कुशीनगर के लोग लंबे समय से सविनय प्रतीक्षा कर रहे हैं कि परम पावन उन पर कृपा करेंगे और आने वाले दिनों में भगवान बुद्ध की इस महापरिनिर्वाण भूमि पर पधारेंगे। कुशीनगर के लोग उस दिन को अपनी आनेवाली पीढ़ियों के लिए ऐतिहासिक अवसर बनाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे।
समारोह के मुख्य विधि-विधान का पालन श्री सुरेश प्रताप गुप्त द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आयोजन नामग्याल मठ, कुशीनगर के साथ मिलकर संयुक्त रुप से की गई थी। इसमें महामारी के मौजूदा दौर को ध्यान में रखते हुए सामाजिक दूरी के सभी मानदंडों का पालन करते हुए विशाल सभा हुई। इसके बाद कुशीनगर के माननीय विधायक द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

• भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस पर 'तिब्बत के लिए न्याय: कानूनी लड़ाई' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया

tibet.net, १९ जुलाई, २०२१

भारत तिब्बत समन्वय संघ ने आयोजित की एक वेबिनार।

लखनऊ। १७ जुलाई २०२१ को अंतरराष्ट्रीय न्याय दिवस के अवसर पर भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) ने 'जस्टिस फॉर तिब्बत: द लीगल बैटल (तिब्बत के लिए न्याय: कानूनी लड़ाई)' नामक एक वेबिनार का आयोजन किया। इसमें उत्तर प्रदेश लोक सेवा न्यायाधिकरण के अध्यक्ष न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) सुधीर कुमार सक्सेना; भारत के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल श्री शशि प्रकाश सिंह; आरएसएस प्रचारक श्री रामाशीष जी; वरिष्ठ अधिवक्ता और तिब्बती सर्वोच्च न्याय आयोग की पूर्व ज्यूरी श्रीमती नामग्याल त्सेकी; एचआईपीए के संकाय सदस्य और बीटीएसएस हिमाचल प्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष श्री बी.आर. कौंडल और अधिवक्ता परिषद, उत्तर प्रदेश के राज्य महासचिव (कार्यकारी) श्री अश्विनी कुमार त्रिपाठी उपस्थित थे।

न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) सुधीर कुमार सक्सेना ने वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि तिब्बत हमेशा से एक स्वतंत्र देश रहा है लेकिन १९४९ में चीन ने इस पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया। उन्होंने कम्युनिस्ट चीनी शासन के तहत तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति की ओर इशारा किया। उन्होंने तिब्बत में मानवाधिकारों के हनन का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि चीन तिब्बत पर अनधिकृत कब्जा कर यहां के संसाधनों का दोहन कर रहा है। तिब्बत की बौद्ध संस्कृति पर हमला किया गया है, जिससे हम भारत के लोग भी बहुत आहत महसूस कर रहे हैं। इसका कारण यह है कि बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भारत में हुई थी और भारतीय लोग भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षाओं का सम्मान करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने आत्मनिर्णय के तिब्बत के अधिकार पर विचार किया था, लेकिन चीन के डर से उस पर कभी गंभीर कदम नहीं उठाए गए। उन्होंने कहा कि यह पूरी दुनिया के समर्थन से अंतरराष्ट्रीय मंच पर तिब्बत के लिए खड़े होने और न्याय की मांग करने का समय है और भारत इसका नेतृत्व करेगा।

श्री शशि प्रकाश सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि चीन ने तिब्बत के लोगों को छोटी-छोटी बातों के लिए प्रताड़ित किया है और यह अत्याचार अभी भी बदस्तूर जारी है। तिब्बत की आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहे सैकड़ों लोग अभी भी आजीवन कारावास और मृत्युदंड जैसे जघन्य अत्याचारों के शिकार हो रहे हैं। हमें इसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रमुखता से उठाना होगा। उन्होंने कहा कि इसका समाधान भारत ही दे सकता है, भारत के पास शक्ति है कि वह पूरी दुनिया के साथ मिलकर तिब्बत की इस समस्या का समाधान कर सकता है।

श्री रामाशीष जी ने अपने संबोधन में कहा कि लद्दाख में चीनी लाल सेना द्वारा की गई हिंसा को कभी भुलाया नहीं जा सकता। भारत ने हमेशा तिब्बत को अपना माना है। चीन सिर्फ बौद्ध धर्म का ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के अध्यात्म का दुश्मन है। उन्होंने कहा कि आज समय की मांग है कि भारत के लोग हर स्तर पर तिब्बत के न्याय के साथ खड़े हों और उनकी लड़ाई में उनका साथ दें। हालांकि, उन्होंने तिब्बतियों से सक्रिय क्रांति करने का बीड़ा उठाने का भी आह्वान किया। उन्होंने दलाई लामा के जन्मदिन पर इस बार प्रधानमंत्री मोदी के बधाई संदेश वाले ट्वीट को चीन के खिलाफ भारत की नीतिगत तैयारियों का संकेत बताया।

श्रीमती नामग्याल त्सेकी ने वेबिनार को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया की छत कहा जाने वाला तिब्बत १९५९ से अंतरराष्ट्रीय समुदाय से न्याय की गुहार लगा रहा है। आज चीन हर जगह हमारी संस्कृति, भाषा, धार्मिक जीवन और स्वतंत्रता पर हावी होना चाहता है। वर्तमान में तिब्बत में मानवाधिकारों का जिस तरह से हनन हो रहा है उसका कोई अन्य उदाहरण कहीं और नहीं मिल सकता है। उन्होंने आगे कहा कि तिब्बती लोगों का अस्तित्व मिटाने के लिए चीन हर तरह के हथकंडे अपना रहा है। चीन तिब्बती लोगों का सांस्कृतिक संहार कर रहा है जो जनसंहार से भी बदतर है। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि इस सांस्कृतिक संहार को रोकने के लिए अंतरराष्ट्रीय न्याय प्रणाली में कोई उचित न्यायिक व्यवस्था नहीं है। चीन की हरकतें अंतरराष्ट्रीय शांति और समृद्धि के लिए बेहद खतरनाक हैं। चीन सुरक्षा परिषद में वीटो पावर का दुरुपयोग भी करता रहा है।

तिब्बती मामलों के विशेषज्ञ श्री बी.आर. कौंडल ने कहा कि न्याय के संघर्ष में भारत हमेशा तिब्बत के साथ खड़ा रहा है। तिब्बत की आजादी न केवल तिब्बत के लिए बल्कि भारत की सुरक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो पावर हासिल करने में चीन को तत्कालीन भारत सरकार की मदद आज हमारे लिए खतरा बन गई है। तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता का वादा किया गया था, लेकिन वह वादा आज तक पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने सुझाव दिया कि हमें इस मांग को पूरा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में जाना चाहिए।

श्री कौंडल ने कहा कि चीन ने कोरोना के जरिए पूरी दुनिया के खिलाफ जैविक जंग छेड़ दी है। पूरी दुनिया में चीन के खिलाफ माहौल है। भारत को इस मौके का फायदा उठाना चाहिए और चीन के खिलाफ अभियान शुरु करना चाहिए। तिब्बत के लोग तालिबान की तरह हिंसक नहीं बल्कि शांतिप्रिय हैं, इसलिए चीन आज तक उनका दुरुपयोग करता रहा है। यदि ये तिब्बती भी हिंसक होते तो शायद अब तक वे स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके होते।

श्री अश्विनी कुमार त्रिपाठी ने अपने संबोधन में आत्मनिर्णय को तिब्बतियों का अधिकार बताया। उन्होंने कहा कि हमें तिब्बत के लोगों के इस संघर्ष में उनका सहयोगी बनक अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में जाना होगा। उन्होंने कहा कि तिब्बत की भूमि के नीचे खनिज संसाधनों का बहुत बड़ा भंडार है, जिसके कारण चीन इसके माध्यम से विश्वर्थव्यवस्था को नष्ट करना चाहता है। लेकिन भारत समेत पूरी दुनिया में जो माहौल बन रहा है, उससे चीन कभी भी अपनी दुर्भावनापूर्ण योजना में कामयाब नहीं हो पाएगा।

वेबिनार कार्यक्रम में देश भर और विदेशों सहित १४० विभिन्न स्थानों से २३२ लोगों ने भाग लिया। बेबिनार का संचालन भारत-तिब्बत समन्वय संघ के विधि विभाग के अधिवक्ता और राष्ट्रीय संयोजक श्री अनीश श्रीवास्तव ने किया और धन्यवाद प्रस्ताव बीटीएसएस के राष्ट्रीय महासचिव श्री विजय मान ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान बीटीएसएस के केंद्रीय संयोजक श्री हेमेंद्र सिंह तोमर, राष्ट्रीय महासचिव श्री अरविंद केसरी, अंतर्राष्ट्रीय संभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ अमरीक सिंह ठाकुर, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अजीत अग्रवाल, श्री अखिलेश पाठक और श्री मनोज गहात्दी का विशेष सहयोग मिला।

• भारत-तिब्बत सहयोग मंच, मेरठ प्रांत ने 'कैलाश-मानसरोवर मुक्ति संकल्प' पर वेबिनार का आयोजन किया

tibet.net, २६ जुलाई २०२१

भारत तिब्बत सहयोग मंच ने कैलाश मानसरोवर की मुक्ति के विषय पर आयोजित की एक वेबिनार।

२४ जुलाई २०२१, मेरठ। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम), मेरठ प्रांत ने २४-३१ जुलाई २०२१ तक प्रकृति संरक्षण सप्ताह के उपलक्ष्य में २३ जुलाई की शाम को 'सावन महीने में भगवान शिव की पूजा और कैलाश-मानसरोवर मुक्ति संकल्प' विषय पर पहला वेबिनार आयोजित किया। वेबिनार में अतिथि वक्ताओं में भारत-तिब्बत सहयोग मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष स्वामी दिव्यानंद जी महाराज, भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, दिल्ली के समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम और भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम), मेरठ प्रांत के अध्यक्ष डॉ संदीप चौधरी शामिल थे।

वेबिनार को संबोधित करते हुए श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम ने सदियों पुराने भारत-तिब्बत संबंधों और उनके महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने तिब्बत मुक्ति साधना के लिए लंबे समय से काम कर रहे विभिन्न भारत-तिब्बत समर्थक समूहों और तिब्बती मुद्दों के लिए इन सभी समूहों के साथ समन्वय स्थापित करने में भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय की भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आगे भारत और तिब्बत दोनों के लिए कैलाश-मानसरोवर के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि तिब्बत के लिए प्रकाश भारत की भूमि से ही निकलेगा।

स्वामी दिव्यानंद जी महाराज ने अपने संबोधन में भगवान शिव और कैलाश-मानसरोवर के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने भगवान शिव के निवास स्थान कैलाश पर्वत और एशिया की चार प्रमुख नदियों- सिंधु, सतलुज, गंगा और ब्रह्मपुत्र का उद्गम मानसरोवर झील का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि भारत-तिब्बत सहयोग मंच की मुख्य प्रतिज्ञाओं में से एक कम्युनिस्ट चीन के फौलादी कब्जे से कैलाश- मानसरोवर को मुक्त कराना है।

डॉ. संदीप चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत और तिब्बत के लिए मुख्य समस्या कम्युनिस्ट चीन है। उन्होंने जोर देकर कहा कि हम सभी को चीनी उत्पादों का बहिष्कार करने का कठोर संकल्प लेना चाहिए, जो परोक्ष रूप से भारत पर हमला कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत-तिब्बत सहयोग मंच इस मुद्दे पर बातचीत और क्रियाकलापों में आगे बढ़ रहा है और तिब्बत मुक्ति साधना के कार्य को तब तक जारी रखेगा जब तक तिब्बत को आजादी नहीं मिलती और कैलाश-मानसरोवर कम्युनिस्ट चीन से मुक्त नहीं हो जाता।

अंत में, वेबिनार के मेजबान भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम), मेरठ प्रांत के उपाध्यक्ष श्री नीरज करण सिंह ने सभी को कैलाश-मानसरोवर को मुक्त कराने के लिए एक 'श्रावण संकल्प' लेने के लिए प्रेरित किया, जिसमें कहा गया है कि, 'आज श्रावण के महीने में गंगाजल से भगवान शंकर का अभिषेक करते हुए मैं यह संकल्प लेता हूं कि मैं भगवान शिव के निवास कैलाश-मानसरोवर को चीन के प्रभुत्व से मुक्त कराने का भरसक प्रयास करूंगा। मैं इस दिशा में हरसंभव प्रयास में सहयोग करूंगा। भगवान शंकर मुझे इस संकल्प को पूरा करने की शक्ति दें।'

• दिवंगत श्री कुलभूषण बख्शी जी की जयंती पर उन्हें नमन

tibet.net, २६ जुलाई, २०२१

स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी जी की जयंती पर अन्तर्राष्ट्रीय भारत तिब्बत सहयोग समिति और भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र ने याद किया।

मेरठ, २४ जुलाई। दिवंगत श्री कुलभूषण बख्शी तिब्बती मुद्दे के प्रबल समर्थकों में से एक थे। उनके जैसे निस्वार्थ व्यक्तियों द्वारा प्रदान किए गए निरंतर समर्थन और सहायता के कारण तिब्बत के स्वतंत्रता संग्राम की लौ जीवित है। तिब्बत के लिए उनका योगदान बहुत बड़ा और विशाल है। उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के मेरठ में 'अंतरराष्ट्रीय भारत-तिब्बत सहयोग समिति (एबीटीएसएस)' नाम से एक तिब्बत समर्थक समूह का गठन १९९६ में किया गया था। उन्होंने अपने अंतिम दिनों तक एबीटीएसएस, मेरठ के अध्यक्ष के रुप में तिब्बती मुद्दों के लिए जागरुकता पैदा किया और तिब्बत मुक्ति साधना को लेकर भारतीय जनता को जागरूक किया। स्वर्गीय श्री बख्शी भारत में तिब्बत समर्थक समूहों के शीर्ष निकाय- कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया के सक्रिय राष्ट्रीय सह-संयोजक भी थे। तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अहिंसक संघर्ष का सहारा लेना और संघर्ष के दौरान गांधीवादी दर्शन का पालन करना जीवन के अंत तक उनकी मूल कुंजी थी। श्री कुलभूषण बख्शी ने तिब्बत मुक्ति साधना में लगभग दो दशकों से अधिक समय तक बहुत सक्रिय भूमिका निभाई।

स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी को उनकी जयंती पर याद करने, मेरठ क्षेत्र में तिब्बत समर्थक समूहों के साथ फिर से जुड़ने और तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूती प्रदान करने के लिए आईटीसीओ के समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम और स्टाफ तेनज़िन जॉर्डन के साथ कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज़- इंडिया के राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुरेंद्र कुमार मेरठ में स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी की जयंती कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी के चित्र पर दीप जलाकर हुई। स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी के पुत्र और वर्तमान में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया के क्षेत्रीय संयोजक श्री रवि बख्शी ने इस अवसर पर एक साथ आने वाले सभी सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने सदस्यों को इस महामारी के समय में अब तक की गई गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी और तिब्बती आंदोलन के संबंध में भविष्य के कार्यक्रमों के बारे में भी बताया।

आईटीसीओ-समन्वयक श्री जिग्मे त्सुल्ट्रिम ने स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी के साथ अपने अनुभव को याद किया और सदस्यों को महामारी के समय में अब तक आईटीसीओ और विभिन्न तिब्बत समर्थक समूहों द्वारा आयोजित वेबिनार और कार्यक्रमों के बारे में बताया। श्री सुरेंद्र कुमार ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत समर्थक समूहों को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि इस आंदोलन को कैसे मजबूत किया जाए और कौन से नए उपाय तिब्बत आंदोलन को मजबूत और व्यापक बनाने में मददगार हो सकते हैं। उन्होंने सदस्यों

से परम पावन १४वें दलाई को भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' प्रदान करने और परम पावन को भारतीय संसद में आमंत्रित करने के लिए समर्थन जुटाने का भी अनुरोध किया।

एबीटीएसएस मेरठ के अध्यक्ष डॉ. डी.के. पाल ने अपने बयान में इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती आंदोलन को आगे बढ़ाने और भारत में तिब्बत के महत्व के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए भारतीय युवाओं के साथ जुड़ाव जरूरी है और इस प्रकार, सदस्यों को स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में कार्यक्रम शुरु करने की जरूरत है।

अन्य वक्ताओं में श्री मेरठ के पूर्व विधायक रणवीर राणा, अधिवक्ता श्री मुकेश गुप्ता, एबीटीएसएस के कोषाध्यक्ष श्री गौरव अग्रवाल, श्री हर्षद गोयल, श्री रवि बख्शी की पत्नी श्रीमती सुनंदा बख्शी, लेफ्टिनेंट बख्शी की पोती सुश्री दिशा बख्शी, नेरु अग्रवाल, श्री सुदेश कुमार, श्रीमती माशेवता, अधिवक्ता श्रीमती संगीता एवं अन्य थे।

• चीन के गुस्से की परवाह किए बिना ब्लिंकन ने भारत में दलाई लामा के प्रतिनिधि से मुलाकात की

रॉयटर, साइमन लुईस, २८ जुलाई २०२१

ब्लिंकन ने दलाई लामा के प्रतिनिधि से मुलाकात की।

नई दिल्ली, २८ जुलाई, रॉयटर। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने बुधवार को नई दिल्ली में दलाई लामा के एक प्रतिनिधि से मुलाकात की। इससे बीजिंग नाराज हो सकता है क्योंकि वह तिब्बती आध्यात्मिक नेता को खतरनाक अलगाववादी मानता है।

विदेश विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि ब्लिंकन ने कुछ देर तक न्गोडुप डोंगचुंग से मुलाकात की, जिन्होंने उन्हें दलाई लामा की ओर से साफा भेंट किया। डोंगचुंग केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं।

अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर संवाददाताओं से कहा, 'दलाई लामा स्पष्ट रुप से विश्व स्तर पर सम्मानित आध्यात्मिक नेता हैं और इसलिए इस संकेत को कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण किया गया और इसकी सराहना की गई।'

राष्ट्रपति बराक ओबामा के २०१६ में वाशिंगटन में दलाई लामा से मिलने के बाद से यह बैठक अमेरिका और तिब्बती अधिकारियों के बीच सबसे विशिष्ट संपर्क थी।

चीन के विदेश मंत्रालय ने इस पर तत्काल टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। ज्ञातव्य है कि चीन ने १९५० में तिब्बत पर कब्जा कर लिया था, जिसे बीजिंग 'शांतिपूर्ण मुक्ति' कहता है। १९५९ में चीनी शासन के खिलाफ एक असफल विद्रोह के बाद दलाई लामा निर्वासन में भारत भाग गए।

चीन द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाओं की आलोचना के बीच विशेष रुप से अमेरिका से हाल के महीनों में सीटीए और तिब्बत समर्थक समूहों को अंतरराष्ट्रीय समर्थन में बढ़ावा मिला है। नवंबर में, निर्वासित तिब्बती सरकार के तत्कालीन प्रमुख लोबसांग सांगेय ने व्हाइट हाउस का दौरा किया था, जो पिछले छह दशकों में इस तरह की पहली यात्रा थी।

एक महीने बाद, अमेरिकी कांग्रेस ने 'तिब्बत पॉलिसी एंड सपोर्ट ऐक्ट' पारित किया, जो दलाई लामा के उत्तराधिकारी को चुनने के लिए तिब्बतियों के अधिकार को मान्यता देता है और तिब्बत की राजधानी ल्हासा में एक अमेरिकी वाणिज्य दूतावास की स्थापना की मांग करता है।

• आयुक्तों ने आईओसी अध्यक्ष से कहा, अगर चीन दुर्व्यवहार बंद नहीं करता तो २०२२ के शीतकालीन ओलंपिक को स्थगित करें और स्थानांतरित करें

tibet.net, २४ जुलाई, २०२१

अन्तर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति चीन पर प्रतिबंध लगाएगी यदि चीन ने दुर्व्यवहार समाप्त नहीं किया।

चीन पर अमेरिका की द्विसदनीय और द्विदलीय कार्यकारी आयोग के अध्यक्ष (वाशिंगटन) सीनेटर जेफ मर्कले (डेमोक्रेट-ओआर) और कोच रिप्रेजेंटेटिव जेम्स पी. मैकगवर्न (डी-एमए) ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के अध्यक्ष थॉमस बाख को एक पत्र जारी किया। उन्होंने पत्र में लिखा है कि अगर मेजबान चीनी सरकार मानवाधिकारों के घोर हनन को समाप्त नहीं करती है तो २०२२ बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक को स्थगित किया जाए और उन्हें स्थानांतरित किया जाए। उन्होंने कहा कि 'कोई भी ओलंपिक उस देश में आयोजित नहीं किया जाना चाहिए जिसकी सरकार नरसंहार और मानवता के खिलाफ अपराध करने में लिप्त है।' आयोग के अध्यक्ष के इस पत्र पर बाद में सीईसीसी आयुक्तों- सीनेटर मार्को रुबियो (आर-एफएल) और प्रतिनिधि क्रिस्टोफर स्मिथ (आर-एनजे) ने भी अपनी स्वीकृति दे दी। ये दोनों भी पूर्व मे सीईसीसी अध्यक्ष रह चुके हैं।

सीईसीसी आयुक्तों ने कहा, 'यह कार्रवाई एथलीटों के सर्वोत्तम हित में भी होगी।' उन्होंने कहा कि 'हमें आईओसी में यह देखना अनुचित लगता है कि एथलीटों को अपने प्रतिस्पर्धी से आगे निकलने के लिए अपने विवेक का त्याग करने के लिए मजबूर किया जाए, या विवेक का त्याग कर खेलों में जीता जाए।'

सीईसीसी ने २०१८ में आईओसी से झिंझियांग-उग्यूर स्वायत्त क्षेत्र (एक्सयूएआर) में उग्यूर, कज़ाख और अन्य मुस्लिम नस्लीय अल्पसंख्यकों को निशाने पर लेकर

बड़े पैमाने पर उनकी नजरबंदी और उनके साथ अन्य दुर्व्यवहारों को समाप्त करने में मदद करने के लिए चीनी सरकार के साथ अपने विशेष संबंधों का इस्तेमाल करने का आग्रह किया था। उस समय से एक्सयूएआर में स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही थी। हालांकि, आईओसी ने सीईसीसी के २०१८ के उस पत्र का आधिकारिक रुप से कभी जवाब नहीं दिया।

सीईसीसी मंगलवार २७ जुलाई, २०२१ को द ओलंपिक पार्टनर (टीओपी) कार्यक्रम को प्रायोजित करनेवाली अमेरिकी कंपनियों के साथ मिलकर 'बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक-२०२२ का कॉर्पोरेट प्रायोजन' शीर्षक से एक सुनवाई करेगा। अगले हफ्ते की सुनवाई २०२२ बीजिंग शीतकालीन ओलंपिक शृंखला में दूसरी सुनवाई होगी। मई में सीईसीसी ने टॉम लैंटोस मानवाधिकार आयोग के साथ संयुक्त रुप से ' चीन में ८४ का नरसंहार और ओलंपिक' शीर्षक से एक सुनवाई की मेजबानी की थी।

• अमेरिकी सीनेट ने चीन के झिंझियांग से आनेवाले सभी उत्पादों पर प्रतिबंध लगाने वालाविधेयक पारित किया

reuters.com, १५ जुलाई २०२१

अमेरिकी सीनेट ने चीन के शिनजियांग के सभी उत्पादों पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पारित किया।

वाशिंगटन, १४ जुलाई, (रायटर)। अमेरिकी सीनेट ने बुधवार को चीन के झिंझियांग क्षेत्र के उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून पारित किया। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि उग्यूर और अन्य मुस्लिम समूहों के खिलाफ चल रहे नरसंहार के खिलाफ वाशिंगटन में बीजिंग को दंडित करने का यह नवीनतम प्रयास है।

उग्यूर जबरन श्रम रोकथाम अधिनियम से यह अनुमान लगाया जा रहा है कि झिंझियांग में माल का निर्माण श्रमिकों से जबरन कराया गया है। इसलिए १९३० के टैरिफ अधिनियम के तहत अमेरिका में प्रतिबंधित है, जब तक कि अमेरिकी अधिकारियों द्वारा इसे प्रमाणित नहीं कर दिया जाता है।

सर्वसम्मति से पारित, द्विदलीय ऐक्ट के मानकों में इसे साबित करने की जिम्मेदारी अब आयातकों पर डाल दी जाएगी कि इसमें जबरन श्रम नहीं कराया गया है। जबरन श्रम के उचित सबूत होने पर मौजूदा नियम माल पर प्रतिबंध लगाता है।

राष्ट्रपति जो बिडेन के हस्ताक्षर के लिए व्हाइट हाउस में भेजे जाने से पहले बिल को प्रतिनिधि सभा से भी पारित करना होगा। यह तुरंत स्पष्ट नहीं है कि यह कब हो सकता है।

डेमोक्रेट जेफ मर्कले के साथ कानून पेश करनेवाले रिपब्लिकन सीनेटर मार्को रुबियो ने सदन से शीघ्र कायावाही चलाने का आह्वान किया। रुबियो ने एक बयान में कहा, 'हम मानवता के खिलाफ सीसीपी के चल रहे अपराधों से आंखें नहीं मूंदेंगे, और न ही हम निगमों को वहां के भयानक दुर्व्यवहारों से लाभ उठाने की अनुमति देंगे।'

मर्कले ने कहा, 'किसी भी अमेरिकी निगम को वहां किए जा रहे अत्याचारों से लाभ नहीं उठाना चाहिए। किसी भी अमेरिकी उपभोक्ता को अनजाने में गुलामी के श्रम से उत्पादित सामान नहीं खरीदना चाहिए।'

सदन को ध्यान में रखते हुए डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन सहयोगियों ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि इस उपाय को सदन में मजबूत समर्थन मिलेगा। पिछले साल सदन ने लगभग सर्वसम्मति से इसी तरह के उपाय को मंजूरी दी।

यह बिल चीन में अधिकारों के हनन के आरोपों के मद्देनजर अमेरिकी आपूर्ति शृंखलाओं को सुरक्षित करने के लिए पहले से उठाए गए कदमों से आगे निकल जाएगा। वर्तमान में चीन में झिंझियाग के टमाटर, कपास और कुछ सौर उत्पादों पर प्रतिबंध लागू हैं।

बिडेन प्रशासन ने प्रतिबंधों में शामिल वस्तुओं की संख्या में वृद्धि की है और मंगलवार को एक सलाह जारी करते हुए व्यावसायियों को चेतावनी दी है कि अगर झिंझियांग में अपने व्यावसायिक गतिविधियों को अप्रत्यक्ष रूप से भी जारी रखते हैं और यह निगरानी नेटवर्क से जुड़ता है तो यह अमेरिकी कानून का उल्लंघन माना जाएगा।

अधिकार समूहों, शोधकर्ताओं, पूर्व निवासियों और कुछ पश्चिमी सांसदों और अधिकारियों का कहना है कि झिंझियांग के अधिकारियों ने २०१६ के बाद से अब तक लगभग एक लाख उग्यूर और अन्य लोगों को, जिनमें मुख्य रुप से मुस्लिम अल्पसंख्यक थे, हिरासत में लेकर जबरन श्रम शिविरों में डाल दिया है। रिपोर्टिंग- माइकल मार्टिना; अतिरिक्त रिपोर्टिंग- पेट्रीसिया ज़ेंगरेल; संपादन- लेस्ली एडलर।

• चीन की 'दलाई लामा के बाद' की योजना, भारत को स्पष्ट तिब्बत नीति की जरूरत

tibetpolicy.net, ०२ जुलाई, २०२१

येशी दावा।

तिब्बतियों और विश्व बिरादरी के बीच जरा सी भी विश्वसनीयता नहीं होने के बावजूद चीन अगले दलाई लामा को कम्युनिस्ट पार्टी के हाथों की कठपुतली बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है।

पूरी तरह विश्वसनीयता के अभाव में भी चीन अपनी पसंद के अगले दलाई लामा को स्थापित करने के अपने दावों को विभिन्न माध्यमों से प्रचारित में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है।

उन्होंने दलाई लामा को 'भेड़ के वेष में भेड़िया' कहा और उनके खिलाफ अवांछित अपमानजनक टिप्पणी का इस्तेमाल किया है। जबकि पिछले साठ

साल से दलाई लामा तिब्बतियों के दिलो- दिमाग में बसे हुए हैं और सबसे सम्मानित व्यक्ति हैं। जुलाई में जब वह ८६ वर्ष के हो गए, तो पूरी दुनिया से उन्हें जन्मदिन पर शुभकामनाओं का तांता लग गया था। सिवाय चीनी अधिकारियों के जो इस दुनिया से जितनी जल्दी हो सके, उन्हें विदा होते देखना चाहते हैं, ताकि वे एक व्यर्थ और अदूरदर्शी दृष्टि वाला कठपुतली दलाई लामा स्थापित कर सकें।

दलाई लामा के बाद क्या?

आज, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) लोकतंत्र पर आधारित दुनिया भर में अच्छी तरह से स्थापित निर्वासित सरकारों में से एक है। कुछ लोग इसे 'बोन्साई लोकतंत्र' कहते हैं।

वास्तव में, निर्वासन में ऐसी स्थापना कभी भी इतनी व्यवस्थित ढंग से नहीं होती है। तिब्बत में दलाई लामा ने इसकी कल्पना की थी और छह दशकों के बाद भारत में यह फलीभूत हुई है।

कई चीनी विशेषज्ञ वर्तमान दलाई लामा के गुजर जाने के बाद तिब्बती मुद्दे को लंबे समय तक चलने पर संदेह और आनेवाली चुनौतियों के सामने खत्म हो जाने का अनुमान लगाते हैं। हालांकि चीन को इस मामले में निराश करते हुए दुनिया के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका ने पिछले साल एक कानून पारित किया था। इसके अनुसार दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन का अधिकार तिब्बती लोगों और लामाओं को है। किसी अन्य को इस प्रक्रिया में किसी तरह से हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। दूसरी ओर इसके लोकतांत्रिक रुप से चुने गए राजनीतिक नेता यानि- सिक्योंग ने किसी तरह चीनी सरकार को एक संदेश भेजा कि राष्ट्रीय आंदोलन चलता रहेगा और दलाई लामा के निधन के बाद भी जारी रहेगा।

चीन का दमन और तिब्बती अशांति

चीनी सरकार तिब्बत पर छह दशकों के कब्जे के बाद भी तिब्बतियों के दिल-दिमाग को जीतने में बुरी तरह विफल रही, लेकिन उनके प्रयास कभी खत्म नहीं हुए। चीनियों ने चाहे कितना भी कठोर दमन का सहारा क्यों न लिया हो, तिब्बतियों ने संघर्ष के दौरान अब तक हिंसक तरीके का सहारा कभी नहीं लिया है।

ब्रह्म चेलानी जैसे विद्वान इस बात के लिए तिब्बतियों की सराहना करते हैं कि 'चीन की दमनकारी नीतियों के बावजूद तिब्बतियों ने कभी भी हथियार नहीं उठाया, जबकि इस दौरान १५६ तिब्बतियों ने आत्मदाह कर लिया। लेकिन चेलानी चेतावनी देते हैं कि 'वर्तमान दलाई लामा के न रहने पर यही प्रवृत्ति जारी नहीं रह सकती है।'

उनके लिए सहूलियत की बात वह होगी, जिसका वर्णन दलाई लामा के पूर्व विशेष दूत स्वर्गीय लोदी ग्यारी ने अपने एक भाषण में किया था कि 'यदि चीनी सरकार दलाई लामा के जीवित रहते हुए तिब्बत के मुद्दे को हल नहीं कर सकती है, तो हम नहीं जानते कि जब तिब्बतियों का दशकों तक का जमा गुस्सा फूटेगा क्या होगा।'

फिर भी, तिब्बती मुद्दे का अस्तित्व पूरी तरह से अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित है। यह अब तक के इतिहास का ऐसा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसे कई संघर्षरत राष्ट्रों ने अपनाया और सफल हुए। तिब्बती संघर्ष भी इसका कोई अपवाद नहीं है।

अगला कौन है? दलाई लामा के बाद नेतृत्व की जगह खाली है

कई लोगों का मानना है कि दलाई लामा के बाद करिश्माई नेतृत्व की शून्यता एक और महत्वपूर्ण चुनौती होगी।

वर्तमान दलाई लामा ने सोलह वर्ष की आयु में राजनीतिक जिम्मेदारी संभाली। अगले दलाई लामा किस उम्र में करिश्माई नेतृत्व की भूमिका ग्रहण करेंगे, यह भविष्यवाणी करना एक कठिन काम है।

दलाई लामा ने पहले से ही इस तरह की परिस्थिति का अनुमान लगा रखा है और इसीलिए २०११ में धर्मनिरपेक्ष नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके राजनीतिक नेतृत्व से सेवानिवृत्त होने के बाद, निर्वासित तिब्बतियों के बीच तीन दौर के चुनाव हुए जिसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान अपनी ओर खींचा है। लेकिन दलाई लामा के बाद करिश्माई नेतृत्व की रिक्तता को भरने के लिए तिब्बत नीति संस्थान के निदेशक तेनज़िन लक्षय ने सुझाव दिया कि वैकल्पिक तरीकों में से एक आध्यात्मिक लामाओं का सामूहिक नेतृत्व हो सकता है।

इससे भी महत्वपूर्ण सुझाव दलाई लामा ने खुद एक बार युवा लिंग रिनपोछे और १७वें करमापा से कहा था कि 'जब मैं जीवित ना राहु तो आप दोनों को काम जारी रखना होगा।'

यहाँ से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि तिब्बती आध्यात्मिक लामाओं का सामूहिक नेतृत्व रिक्तता को तब तक भर सकता है, जब तक कि अगला दलाई लामा उस भूमिका को ग्रहण करने के लिए पूरी तरह से तैयार न हो जाए।

अगले दलाई लामा का जन्म कहां होगा इसके भू-राजनीतिक निहितार्थ

यदि चीन द्वारा एक कठपुतली दलाई लामा बैठाए जाते हैं तो भारत को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। भू-राजनीतिक रुप से सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि पूरा हिमालय क्षेत्र को इन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

बहुत संभव है कि चीन इन क्षेत्रों में अपने पंजे फैलाने के लिए 'दलाई लामा इंस्टीट्यूशन' को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकता है। चीन ऐसी कहानियां गढ़ने में माहिर है, जिन्हें इतिहास भी नहीं ढूंढ सकता।

ऐसी दुखद स्थिति से बचने के लिए वर्तमान दलाई लामा दूरदर्शी दृष्टि के साथ संकेत देते हैं कि उनका पुनर्जन्म एक स्वतंत्र देश में होगा। कई लोग ताइवान का अनुमान लगाते हैं, क्योंकि उन्होंने कई बार वहां की यात्रा की है।

तिब्बती मामलों के विख्यात विशेषा क्लॉउडे अर्पि का मानना है कि उनका पुनर्जन्म एक स्वतंत्र देश में होगा। उनके अनुसार, लद्दाख एक दिलचस्प विकल्प हो सकता है, क्योंकि यह उन्हें तिब्बती और हिमालयी भक्तों के करीब रखेगा।

दलाई लामा ने कहा कि वह तिब्बती बौद्ध परंपराओं और तिब्बतियों के उच्च लामाओं से परामर्श करेंगे कि क्या दलाई लामा नामक इस संस्था को जारी रखना चाहिए या नहीं।

संस्था जारी रहती है तो दलाई लामा की खोज समिति को कुछ सलाह है :

'मैं इस बारे में स्पष्ट लिखित निर्देश छोड़ जाऊंगा। ध्यान रखें कि इस तरह के वैध तरीकों से मान्यता प्राप्त पुनर्जन्म के अलावा, राजनीतिक उद्देश्यों के लिए चुने गए उम्मीदवार को कोई मान्यता या स्वीकृति नहीं दी जानी चाहिए, जिसमें चीनी सरकार का उम्मीदवार भी शामिल है।

भारत को चीन की योजनाओं को पूरा करने के लिए कार्य करना चाहिए

दूसरी ओर, चीन बौद्ध धर्म पर आधारित अपने को नरम शक्ति वाली छवि को जोर-शोर से प्रचारित कर रहा है। इसलिए, भविष्य में वे अपनी इस छवि का उपयोग चीन द्वारा थोपे गए दलाई लामा को बौद्ध राष्ट्रों से मान्यता दिलवाने में कर सकते हैं। हैरानी की बात है कि चीन के निहित दबाव में एशिया के कई बौद्ध राष्ट्रों ने पहले ही वर्तमान दलाई लामा के लिए अपने दरवाजे बंद कर लिए हैं, और उन्हें अपने देश की यात्रा की अनुमति नहीं दे रहे हैं। जबकि चीन के थोपे ग्यारहवें पंचेन लामा को आमंत्रित कर रहे हैं। उन्होंने २०१९ में थाईलैंड का दौरा किया और बैंकाक में एक बौद्ध विश्वविद्यालय में भाषण दिया।

चीन द्वारा अपने थोपे दलाई लामा को हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने और बौद्ध धर्म का नेता बनाने से रोकने के लिए नई दिल्ली को 'भारत के पुत्र' कहलाने वाले दलाई लामा पर अमेरिकी कानून की तरह कानून बनाकर अधिक यथार्थवादी ध्यान देना चाहिए। अमेरिका कानून में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि चीन को अगले दलाई लामा के चयन में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

ऐसा करने पर चीन एशिया, विशेष रुप से भारत की ओर अपने प्यादों को आगे बढ़ाने से पहले दो बार सोचेगा।

(येशी दावा वर्तमान में तिब्बत नीति संस्थान में फेलो हैं और तिब्बत टीवी में होस्ट

हैं। यहां व्यक्त किए गए विचार तिब्बत नीति संस्थान के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। लेख ०१ जुलाई २०२१ को द क्विंट में पुनर्प्रकाशित किया गया था)।

• हताशा, चिंता और अहंकार की अभिव्यक्ति है शी की तिब्बत यात्रा

sundayguardianlive.com, २४जुलाई, २०२१

विजय क्रान्ति।

शी की यात्रा ने तिब्बत के 'चीन का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा' होने के चीन के दावे के खोखलेपन को उजागर किया या तिब्बती दलाई लामा के 'सामंती' शासन से 'मुक्ति' दिलाने को लेकर चीन से 'खुश' और उसका 'आभारी' हैं।

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की तिब्बत की अचानक और नाटकीय यात्रा के एक से अधिक निहितार्थ हैं। इसका कोई एक निहितार्थ दूसरे से कम महत्वपूर्ण नहीं है। चीन के सबसे प्रसिद्ध उपनिवेश तिब्बत के सुपर बॉस शी ने चीन के राष्ट्रपति का पद, कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव का पद और चीनी सेना के सर्वोच्च सैन्य कमांडर का पदभार ग्रहण करने के बाद तिब्बत का पहली बार दौरा किया है।

शी के तिब्बत दौरे को जिस असाधारण गोपनीयता में रखा गया और बहुत कम समय के लिए आयोजित किया गया, इसने एक बार फिर चीनी प्रतिष्ठान की अपनी तिब्बती जनता में विश्वास की कमी और अपने सर्वोच्च नेता की व्यक्तिगत सुरक्षा के बारे में चिंता और भय को उजागर कर दिया है। निंगची में नए रेलहेड और महत्वाकांक्षी चेंगदू-ल्हासा रेलवे परियोजनाओं की प्रगति देखने में उनकी गहरी व्यक्तिगत रुचि ने तिब्बत को पूरी तरह से एक उपनिवेश में बदलने के शी के दृढ़ संकल्प और भारत के खिलाफ सैन्य दबाव बढ़ाने के बारे में उनकी योजनाओं को रेखांकित कर दिया है। ब्रह्मपुत्र पर प्रस्तावित मेगा हाइड्रो परियोजना में अपनी रुचि प्रदर्शित करने के लिए किसी सर्वोच्च चीनी नेता की यह पहली यात्रा भी भारत के प्रति उनकी निराशा और अहंकार की अभिव्यक्ति है। बाद में ल्हासा में उनकी नाटकीय उपस्थिति ने जीवन भर के लिए चीन के सर्वोच्च नेता बनने की उनकी महत्वाकांक्षा को भी उजागर कर दिया।

शी के निंगची और फिर ल्हासा में उतरने के दो दिन बाद जिस तरह से चीनी मीडिया द्वारा उनकी यात्रा की सूचना तिब्बती लोगों और विश्व समुदाय को दी गई, उसने तिब्बत के 'चीन का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा' होने के चीन के लगातार दावों के खोखलेपन को उजागर कर दिया। तिब्बती दलाई लामा के 'सामंती' शासन से 'मुक्ति' के लिए चीन के प्रति 'खुश' और उसके 'आभारी' हैं। तिब्बत से आ रही रिपोर्टों से पता चलता है कि निंगची और ल्हासा दोनों जगहों की उनकी यात्रा के दौरान लगभग कर्फ्यू जैसा लॉकडाउन रखा गया था। कुछ चुनिंदा लोगों की भीड़ को छोड़कर, जो दोनों शहरों में चीन के राष्ट्रीय टीवी कैमरों के सामने अच्छी तरह से सुसज्जित कराकर और हाथ मिलाकर उनका स्वागत करने के लिए लाई गई थी, वहां के लोगों को घर के अंदर रहने का आदेश दिया गया था। जितने समय तक शी तिब्बत में रहे, उतने समय तक तिब्बत की सड़कें सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहीं और चीन तथा तिब्बत का नियंत्रण अपने हाथ में लेने के बाद से पहली बार हर तिब्बती शहर, कस्बा और गांव पर, वहां लगाए गए हजारों सुरक्षा कैमरों से बारीक निगरानी रखी गई थी।

शी का मंच पर किया गया यह प्रायोजित नाटक और उनके स्वागत का स्वांग यह दिखाता है कि तिब्बत और तिब्बत के लोगों पर सात दशकों के लौह-नियंत्रण के बावजूद चीनी शासक तिब्बतियों का दिल जीतने में नाकाम रहे हैं। फिर भी, तिब्बत यात्रा के दौरान अपनी निजी सुरक्षा के बारे में इतने भयभीत रहे शी को हाल की घटनाओं पर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। इनमें हाल के वर्षों में १५० से अधिक तिब्बती नागरिकों द्वारा आत्मदाह, चीन के औपनिवेशिक शासन के खिलाफ सार्वजनिक विरोधों की एक अंतहीन श्रृंखला प्रमुख है। तिब्बत में समय समय पर हुए विरोध प्रदर्शनों के बारे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी रिपोर्ट प्रकाशित होती रही हैं। इनमें १९५९, १९८७, १९८९ और २००८ के देशव्यापी विद्रोह की रिपोर्टें प्रमुख हैं। इसके साथ ही चीनी राष्ट्रपति को भारत और नेपाल की ओर हजारों तिब्बतियों के साहसिक पलायन के बारे में भी अपनी नीति और मंशा स्पष्ट करनी चाहिए।

निंगची में शी के लिए अति महत्वपूर्ण स्थान १६२९ किलोमीटर लंबी चेंगदू-निंगची-ल्हासा रेल परियोजना थी, जिसकी लागत 49 अरब डॉलर है और जो ३००० किलोमीटर लंबे चेंगदू-शिनिंग-गोर्मो-ल्हासा-निंगची रेल मार्ग के स्थान पर शुरु की गई है। इस नई रेल लाइन के माध्यम से अब चीनी सेना को पहले के ४८ घंटे के मुकाबले केवल १० घंटों में ही भारतीय सीमाओं पर पहुंचाया जा सकता है। इससे तिब्बत पर चीन की सुरक्षा पकड़ और मजबूत हो गई है। यह नया घटनाक्रम भारतीय रक्षा बलों के लिए एक नई चुनौती पेश कर सकता है, जिन्होंने पांच साल पहले ही अपनी सीमा चौकियों को सड़कों से जोड़ना शुरु किया था। असल में, वर्तमान की नरेंद्र मोदी सरकार ने पांच साल पहले सीमाओं को सड़कों से न जोड़ने की पूर्ववर्ती सरकारों की नीति को पलट दिया था। पूर्ववर्ती सरकारों ने इस डर से सीमा तक सड़क बनाने का काम नहीं किया था कि युद्ध के समय चीनी सेना भारतीय मुख्य भूमि पर कब्जा करने के लिए इन सड़कों का इस्तेमाल करेंगे।

शी की ब्रह्मपुत्र यात्रा से भारतीय सीमा पर बांधों और बिजलीघरों का एक परिसर बनाने की उनकी योजना की पुष्टि होती है। यह दुनिया के सबसे बड़े और चीन के गौरव 'थ्री गोरजेस डैम' से तीन गुना बड़ा होगा। यदि यह पूरा हो जाता है तो यह भाखड़ा- नंगल बांध से १११ गुना और भारत की शीर्ष पांच समान परियोजनाओं की कुल स्थापित क्षमता से नौ गुणा बड़ा होगा। चीन द्वारा भारत की सीमाओं पर नदियों और बांधों के साथ छेड़छाड़ के कारण भारत को कम से

कम तीन बार गंभीर बाढ़ का सामना करना पड़ा है। ब्रह्मपुत्र पर शी की खतरनाक बांध की योजना भारत के लिए एक और बुरा सपना बनने जा रहा है।

अपने हालिया भाषणों में शी ने घोषणा की थी, 'देश पर शासन करने के लिए सीमा पर शासन करना आवश्यक है और सीमा पर शासन करने के लिए पहले तिब्बत को स्थिर करना आवश्यक है।' शी का घोषित उद्देश्य आजीवन चीन का सर्वोच्च नेता बनना है जो माओ और देंग शियाओपिंग की शक्ति और लोकप्रियता से लैस होगा। इस सपने को पूरा करने के लिए शी को तिब्बत पर नियंत्रण और भारतीय सीमाओं पर प्रभुत्व कायम करना होगा। तिब्बत की उनकी अचानक यात्रा उनकी चिंता और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के उनके दृढ़ संकल्प- दोनों को स्पष्ट रुप से प्रदर्शित करती है। भारत न तो शी के नवीनतम कदमों और न ही सीमा पार तिब्बत में उनके मंसूबों को नजरअंदाज करने का जोखिम उठा सकता है।

विजय क्रांति तिब्बत-चीन के घटनाक्रमों पर लगातार नजर रखने वाले वरिष्ठ भारतीय पत्रकार हैं। वह 'सेंटर फॉर हिमालयन एशिया स्टडीज एंड एंगेजमेंट', नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं।

***

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Jigmey Tsultrim
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीचे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

जिगमे त्सुलट्रिम
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578, 29840968
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

स्वर्गीय श्री कुलभूषण बख्शी जी की जयंती पर अन्तर्राष्ट्रीय भारत तिब्बत सहयोग समिति और भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र ने याद किया।

तिब्बत सपोर्ट ग्रुप ने परम पवन जी का जन्मदिन मनाया।